आनन्दभाष्यकृद्रामानन्दाचार्य जगद्गुरोः ।
तत्त्वानां सं प्रकाशा प प्रवृत्ता पीठ पत्रिका ॥
विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तः श्रुतिस्मृत्यनुमोदितः ।
पूर्वाचार्यैरनुज्ञातो वाहिकेति निबोधतः ॥

आचार्यपीठों के आराध्य
सर्वेश्वरश्रीसीतारामजी

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार
जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यजी
(१३५६-१५३२)

प्रवर्तक
जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्य
श्रीरामप्रपन्नाचार्य योगीन्द्र
संचालक श्रीकोसलेन्द्रमठ

कार्यालय आचार्यपीठ श्रीकोसलेन्द्रमठ
सरखेजरोड पो. पालडी
अहमदाबाद-३८०००७
दूरभाष-: ६६०१००१

प्रवाहक
आनन्दभाष्यसिंहासंनासीन
जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्य
श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी

पर्यवेक्षक 卐 जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यजी
संरक्षक 卐 श्रीदलपतराम हरिदास देवमुरारी
सम्पादक 卐 डॉ. स्वामी श्रीसीतारामाचार्यजी
स.संपादक 卐 पं. श्रीशरच्चन्द्र शास्त्रीजी
व्यवस्थापक 卐 म.मं.स्वामी श्रीरामावतारदासजी रत्न
प्रकाशक 卐 स्वामी श्रीहरिप्रसादाचार्यजी

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यपीठ

सचित्र धार्मिक मासिक

वर्ष-२४ विक्रमाब्द-२०५९ २-अङ्क
श्रीरामानन्दाब्द-७०२ ॥ २००२-अप्रैल

卐 श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः 卐

'रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले'

आनन्दभाष्यकार जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यजी

॥ की ७०२वीं जयन्ती स्मृति ॥

खं नभो वेद वेद प्रमिते वर्षे गते कलौ । माघस्य कृष्णसप्तम्यामाचार्यः समवातरत् ॥

卐 ४४०० ॥ ४५७६ 卐

रसर्षिबाणवेदाब्दे मधुमासे कलौयुगे । श्रीमद्रामनवम्यां वै साकेतमगमत्प्रभुः ॥

आविर्भाव-माघकृष्ण सप्तमी विक्रमसम्वत १३५६ स्थान-प्रयागराज पिता-श्रीपुण्य सदनशर्माजी माता-श्रीसुशीलादेवीजी गुरु-जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी गोत्र-वशिष्ठ प्रवर-वशिष्ठ शक्ति पराशर वेद-शुक्लयजुर्वेद शाखा-माध्यन्दिनीय वाजसनेय श्रौतसूत्र-कात्यायनीय धर्मसूत्र-बोधायनीय पाद-दक्षिण शिखा-दक्षिण देवता-विष्णु इष्ट-श्रीसीतारामजी ब्राह्मण-कान्यकुब्ज आचार्यपीठ-श्रीमठ पञ्चगङ्गा घाट वाराणसी । विरक्त श्रीवैष्णव संन्यास दीक्षा तिथि वसन्तपञ्चमी विक्रमसम्तत १३८१ आचार्यपदाभिषेक तिथि वसन्तपञ्चमी १३९५ विक्रमसम्वत । तिरोभाव-चैत्रशुक्ल नवमी विक्रमसम्वत १५३२-१७६ वर्ष आयु ।

कृति-१-ईशावास्योपनिषदानन्दभाष्यम् ।
२-केनोपनिषदानन्दभाष्यम् ।
३-कठोपनिषदानन्दभाष्यम् ।
४-प्रश्नोपनिषदानन्दभाष्यम् ।
५-मुण्डकोपनिषदानन्दभाष्यम् ।
६-माण्डूक्योपनिषदानन्दभाष्यम् ।
७-तैतिरीयोपनिषदानन्दभाष्यम् ।
८-ऐतरेयोपनिषदानन्दभाष्यम् ।
०९-छान्दोग्योपनिषदानन्दभाष्यम् ।
१०-बृहदारण्यकोपनिषदानन्दभाष्यम् ।
११-श्वेताश्वतरोपनिषदानन्दभाष्यम् ।
१२-ब्रह्मसूत्रानन्दभाष्यम् ।
१३-गीतानन्दभाष्यम् ।
१४-श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः ।
१५-श्रीरामार्चनपद्धतिः । आदि,

卐 सर्वेश्वर श्रीसीतारामाभ्यां नमः 卐

आनन्दभाष्यकार जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यजी

का

॥ संक्षिप्त-परिचय ॥

प्रस्तोता

आनन्दभाष्यसिंहासनासीनजी

आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का अवतार माघकृष्ण सप्तमी विक्रमसम्वत् १३५६ में अतिसमृद्ध वशिष्ठ गोत्रीय तीनप्रवर वाले शुक्लयजुर्वेदीय वाजसनेय शाखाध्यायी कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में प्रयागराज में हुआ था। आपके पिताजी का नाम पण्डित श्रीपुण्य सदन शर्माजी तथा माताजी का नाम श्रीमती सुशीलादेवी था दम्पती द्वारा सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी की प्रबल आराधना से प्राप्त आप एकमात्र सन्तान थे जन्मनाम '**रामानन्द**' था। '**रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले**' इस आगम प्रमाण्य से मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामजी के अवतार होने से प्रारम्भ से ही आप सवजनों के आकर्षण के केन्द्र बने थे बाललीला व्याज से बालपन से ही सस्वर वेदगान करना आपकी लीला का एक अङ्ग बन गया था। प्रारम्भिक शिक्षा घर में ही पिताजी के पास सम्पन्न होने पर मनुस्मृति आदि स्मृति के नियमानुसार विक्रमसम्वत् १३६१ वसन्तपञ्चमी में सविधि यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराकर विशिष्टाध्ययन के लिये श्रीमठ जो श्रीसम्प्रदाय का ख्यातिप्राप्त आचार्यपीठ था में श्रीसम्प्रदाय के २१ वें आचार्य जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी के छत्र छाया में वाराणसी पहूँचकर विधि विधान के साथ वेद वेदान्तों का अध्ययन कर उनमें कुछ समय में ही निष्णात हो गये। समस्त धर्मशास्त्र तथा नास्तिक दर्शनों का भी आचार्य चरण से सम्यक् अध्ययन कर सभी विषयों में पटुता प्राप्त कर ली थी परिणामतः शास्त्रार्थ कला में पारङ्गत होने से विपक्षियों को पराजितकर अपने सनातन श्रीवैष्णव धर्म में दीक्षित कर सन्मार्ग में अग्रसर करना आपश्री का व्यवसाय सा होगया था। आपश्री के माता पिता ने गृह प्रत्यावर्तनार्थ आचार्यपीठ में आकर आग्रह किया पर आपने देश तथा धर्म की अति संकटापन्न स्थिति की ओर संकेत कर विरक्त जीवन व्यतीत करते हुये देश तथा धर्म की संरक्षण-सेवा करने की प्रबल इच्छा प्रकटकर जगदाचार्यजी से संन्यास दीक्षा लेने की अनुमति मांगी। पर्याप्त चर्चा विचारणा के पश्चात् माता पिता की प्रव्रज्या ग्रहणकर श्रीवैष्णव धर्मोद्धार की आज्ञा प्राप्त हो जाने पर जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी ने सविधि पञ्चसंस्कार पूर्वक १३८१ विक्रमसम्वत् वसन्तपञ्चमी के पुण्य पर्व पर २५ वर्ष की अवस्था में सविधि श्रीवैष्णवीय संन्यास दीक्षा प्रदानकर कषाय वस्त्र तथा त्रिदण्डधारण कराकर

षडक्षर श्रीराममहामन्त्र द्वय मन्त्र चरममन्त्र आदि मन्त्रों तथा रहस्यों का उपदेश दिया। आपका विरक्त दीक्षानाम 'रामानन्दः स्वयं रामः' इस शास्त्रानुमोदित श्रीरामानन्दाचार्यजी ही रहा आचार्यश्री ने केवल पूर्व नामान्त में आचार्य शब्द जोडकर प्रसिद्ध करदिया। देश तथा सनातन धर्म के रक्षा के उद्देश्य से आपने सत्सम्प्रदायाचार्यों तथा विशिष्टजनों की संस्था स्थापित की जिसके आचार्य आप ही थे अतः आप **'जगद्गुरु'** इस महनीय उपाधि से अलंकृत किये गये वस्तुतः इस गरिमामय उपाधि के योग्य आप ही हैं।

आपकी शास्त्रीय तथा व्यवहारिक चातुरिका ही सुपरिणाम था कि एकसाथ में पारस्परिक वैमनस्य तथा यवनों का त्रास समित हुये। आचार्यश्री के समन्वयात्मक प्रचार तथा प्रयास ने समस्त देश में शान्ति तथा आत्मविश्वास का वातावरण जागरित किया परिणामतः गयासुद्दीन से सिकन्दर शाह तक के क्रूर शासकों के आतंक से हिन्दू प्रजा स्वस्थ व सुरक्षित रहसकी। आचार्य प्रवर के लोकोत्तर चमत्कारपूर्ण कार्यों का ही परिणाम है कि इस्लामों के बलात् धर्म परिवर्तनरूपबाढ अवरुद्ध हुआ नहीं तो भारतवर्ष का नकशा आज कुछ और ही होता। आपश्री का विक्रमसम्वत् १३९५ वसन्तपञ्चमी के पुण्य पर्व के दिन विशेष समारोह के साथ जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी ने ३९ वर्ष की अवस्था में श्रीसम्प्रदाय के २२ वें आचार्य के रूपमें अभिषेक किया, इसी प्रसङ्ग में समस्त धर्माचार्यों व जनता द्वारा 'आचार्यसम्राट्' की उपाधि से विभूषित किये गये आचार्यजी ने सनातन धर्म प्रचारार्थ तीर्थ यात्रा के बहाने से दिग्विजय यात्रा प्रारम्भ की। अंग-वंग तथा कलिंग आदि प्रदेशों में सभी ने सादर आपकी पूजा की। विजय नगर में महाराजा द्वारा आपकी पालकी वहन की गई तथा अभूतपूर्व स्वागत हुआ इसी उपलक्ष्य में विशिष्ट समारोह के साथ श्रीराममहायाग सम्पन्न हुआ। अनन्तर विजय यात्राक्रम में बोढाण पहुँचकर श्रीसम्प्रदाय के परमाचार्य जगद्गुरु श्रीपुरुषोत्तमा चार्यजी बोधायन के चरणपादुकाओं का सविधि पूजन सम्पन्नकर गिरनार पधारे वहाँ देवताओं द्वारा आपकी श्रीचरण पादुकां प्राप्तकर प्रतिष्ठित की गई। वहां से द्वारका होकर विश्रामद्वारका में पधारकर एक माह तक विश्राम के व्याज से अपने परमाचार्य महर्षि श्रीबोधायनस्थापित श्रौतविशिष्टाद्वैतपीठ-आचार्यपीठ की व्यवस्था संचालन प्रणाली उत्तराधिकार नियुक्ति आदि की सुचारु निर्देशन के साथ वेदान्त दर्शन पर प्रवचन के द्वारा वेदान्त तत्त्व का प्रबल प्रचार करके आबू की ओर प्रस्थित हुये। रास्ते में श्रीकपिल जन्मभूमि में श्रौतविशिष्टाद्वैतरूपी वेदान्त गङ्गा की धरा में साधकों को अवगाहित कराते हुये आबू पहुँचे। आबू में सर्वेश्वर श्रीरघुनाथजी की प्रतिष्ठा प्रसङ्ग में गिरीनाथ महाचार्यजी की आकांक्षाओं को पूर्णतः प्रशमनकर प्रसङ्गोपात अद्वैत मत का भी शास्त्रीय प्रणाली से पूर्णतः खण्डनकर परमवैदिक विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त का विजय ध्वज को फहराने के साथ शङ्खनाद करके समस्तजनों को त्रिविध तापों से मुक्तकर दिये। समस्त प्रदेशों में परिभ्रमण कर सद्धर्म सत्कर्म के सम्बर्धन के साथ सारे देश में भक्ति के लहर को

प्रजागरितकर मानव मात्र को परमधामाभिमुखी बनाकर चैत्रशुक्ल ९ श्रीरामनवमी विक्रमसम्वत् १५३२ में अन्तर्धान हुये-लीलासम्वरण कर श्रीसाकेत पधारे ।

आचार्यजी के **ब्रह्मसूत्र गीता** तथा **उपनिषदों** यों तीनों प्रस्थानों पर प्रसाद गम्भीर परमवैदिक विशिष्टाद्वैतमत प्रतिपादक आनन्दभाष्य हैं । तथा सर्वशास्त्रसार और सर्व जनगम्य तथा सर्वजनोपकारक परिशिष्ट **श्रीरामार्चनपद्धति** के साथ **श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर** जो प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यों का संक्षिप्तसार है आचार्य प्रवर की अत्युत्कृष्ट कृति हैं ।

दुर्दान्त यवन शासक द्वारा अत्याचार का प्रतीक हिन्दूओं पर लादा गया जजियाकर के विरुद्ध आचार्यजी ने धर्मयुद्ध छेडा । यौगिकशङ्खनाद द्वारा जगदाचार्यजी ने निग्रह शक्ति को आकाश मण्डल में प्रसारित करदिया परिणाम स्वरूप देश भर के मस्जिदों में मुल्ला मौलवियों की आवाज बन्द हो गई अतः सर्वत्र नवाज पढना बन्द हो गया । इस आपत्ति से बचने के लिये महम्मद तुगलक बादशाह ने मौलवियों के साथ काशी आचार्यपीठ में आकर श्रीकबीरदासजी को साथ में लेकर जगदाचार्य श्रीरामानन्दाचार्यजी के चरणों में प्रणिपात पूर्वक क्षमा याचना कर सशर्त कुख्यात जजिया करको हटादिया ।

जजिया-कर की १२ शर्ते निम्न हैं-१-हिन्दुओं पर जजिया कर न लगाया जाय । २-हिन्दुओं के धर्मस्थान मठ मन्दिर आदि के बनाने का प्रतिबन्ध उठा लिया जाय । ३-हिन्दू दुलहे को सवारी पर वैठकर मस्जिद के सामने से न जाने का कानून रद्द करदिया जाय । ४-हिन्दु धर्म के प्रचार-प्रसार में किसी प्रकार की रुकावट न डाली जाय । ५-गाय कि कुर्बानी बन्द हो जाय । हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों को जलाना और उसका प्रकाशन बन्द कराना रोका जाय । ७-हिन्दुओं के देव मन्दिरों को गिराकर उस जगह पर मस्जिद बनाना तथा हिन्दुओं को मस्जिद में प्रार्थना करने के लिये बाध्य करने का दुर्व्यवहार को रोका जाय । ८-मोहरम पर या कोई भी अन्य समय पर हिन्दुओं के उत्सवों को न रोका जाय । ९-शङ्ख बजाने का रोक को हटाया जाय । १०-किसी भी मेले या यात्रा में हिन्दुओं से कर न लिया जाय । ११-किसी स्त्री का सतीत्व भङ्ग न किया जाय । और १२-किसी हिन्दु को मुसलमान न बनाया जाय ।

वि.सं. १४३२ में पचासेक हजार विटलाये गये हिन्दुओं को परावर्तन संस्कार (वैदिक संस्कार) द्वारा जगद्गुरुजी ने पुनः सनातन हिन्दु धर्मावलम्बी बनाये जो हठात् मुसलमान बनाये गये थे जिन्हें पण्डितवर्ग ने पुनः हिन्दु धर्म में लेने से मनाई करदी थी जिन में वि.सं. १३८१ में बलात् अपने ३४ हजार राजपूत साथियों के साथ अयोध्या के राजा श्रीहरिसिंह को मुहम्मद तुगलक बादशाह ने मुसलमान बनाया था का भी समावेश है अपनी अलौकिक चमत्कृतिपूर्ण क्रियाकलापों द्वारा पूज्य आचार्यजी ने सभी को सर्वेश्वर श्रीरामजी की प्रपत्ति तथा देव दर्शन का मार्ग प्रशस्त किया जगदाचार्यजी की दिव्य घोषणा है-

'सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणः सदा शक्ता अशक्ता पदयोर्जगत्प्रभोः ।
अपेक्ष्यते तत्र कुलं बलं च नो न चापि कालो न च शुद्धतापि वै ॥'

(श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर ४।५०) अर्थात् भगवत् प्रपत्ति मोक्ष का कारण है इस पर जिज्ञासा होती है कि इस प्रपत्ति का अधिकारी कौन है ? इसके उत्तर में आचार्यजी कहते हैं कि हे सुरसुरानन्द ? जगत्प्रभु सर्वेश्वर श्रीरामजी की शरणागति में सबको अधिकार है । चाहे वह बलवान् हो, बल हीन हो, उच्च कुल में उत्पन्न हो या नीच हो क्योंकि भगवान् परमकृपालु हैं अतः वे स्वप्रपत्ति में कुल तथा जाति आदि की अपेक्षा नहीं रखते हैं । इसलिये जीवमात्र प्रपत्ति का अधिकारी है ।

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी की इस घोषणा को इतिहासकारों ने स्वर्णाक्षरों में अङ्कित किया है जो घोषणानुसार अक्षरस चरितार्थ कर वता दिया है । उदाहरण के रूपमें श्रीकविर दासजी तथा श्रीरमादासजी (रैदास) जी प्रभृति जग जाहेर हैं । ऐसे जगदाचार्यजी चिराग लेकर अन्वेषण करने पर भी नहीं मिलेंगे । वस्तुतः **जगद्गुरुत्व** आप में ही अक्षरस चरितार्थ है ।

विशिष्टाद्वैत-आचार्य प्रवर का सिद्धान्त है आपने ब्रह्मसूत्रों के आनन्दभाष्य में लिखा है-**'एवञ्चाखिलश्रुतिस्मृतीहासपुराणसामञ्जस्यादुपपत्तिबलाच्च विशिष्टाद्वैतमेवास्य ब्रह्ममीमांसाशास्त्रस्य विषयो न तु केवलाद्वैतम्'**-(१।१।१) अतः आप अनादि वैदिक विशिष्टाद्वैत मत जिसका प्रथम प्रतिपादकाचार्य महर्षि बोधायन श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी थे के प्रबल प्रचारक-प्रसारक थे परिणामतः आपके ही नाम से इस **श्रीसम्प्रदाय** का नाम **श्रीरामानन्द सम्प्रदाय** प्रचलित हुआ । संक्षेपतः इस शब्द की व्युत्पत्ति या अर्थ यों है विशिष्टं च विशिष्टं च विशिष्टे विशिष्टयोः अद्वैतम् विशिष्टाद्वैतम् हैं । व्युत्पत्ति में दो वार विशिष्ट कहने का तात्पर्य यह है कि सूक्ष्मचित् तथा अचित् विशिष्ट यानी कारणावस्थापन्न सर्वेश्वर श्रीरामजो और स्थूलचित् तथा अचित् विशिष्ट यानी कार्यावस्थापन्न सर्वेश्वर परब्रह्म श्रीरामजी में एकता-एकरूपता यानी अभेद है परब्रह्म दो नहीं चित्-विशिष्ट-चित् विशेषण से युक्त तथा अचित्-विशिष्ट-अचित् विशेषण से युक्त होने से ही दो ब्रह्म की प्रतीति सी होती है वस्तुतः ब्रह्म में यानी कार्य कारणरूप परब्रह्म श्रीरामजी में अभेद है । इस श्रौतविशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में परात्पर तत्त्व सर्वेश्वर श्रीरामजी हैं । श्रीरामाभिन्नरूपा सर्वेश्वरी श्रीसीताजी पराशक्ति के रूपमें समवराध्या है । श्रीलक्ष्मणादि श्रीरामजी की आज्ञा पालक शेष रूप में हैं । शेषी मात्र सर्वेश श्रीरामजी हैं । अन्य सभी शेष हैं । इस श्रौतविशिष्टाद्वैत मतानुसार जीव तथा ब्रह्म अलग अलग तत्त्व हैं एक नहीं । विशेष्य रूपतया श्रीरामजी हैं तो अन्य समस्त विशेषण रूपसे स्वीकृत हैं इन तत्त्वों के विशेष जानकारी के लिये प्रस्थानत्रयों के आनन्दभाष्य तथा उन पर मेरी प्रकाशटीका श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर तथा मेरी प्रभा-किरण टीका और जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्र

पन्नाचार्यजी योगीन्द्र की तत्त्वत्रयसिद्धि और वेदार्थचन्द्रिका तथा मेरी उनकी टीका तत्त्वदीप और प्रकाश-किरण प्रभृति ग्रन्थों को पढें यहां तो केवल दिग्दर्शन मात्र कराया गया है।

आचार्यश्री के भाष्य-प्रस्थानत्रय ब्रह्मसूत्र गीता तथा उपनिषदों के आनन्दभाष्य हैं-उनमें प्रतिपाद्य विषय-माया, जीव तथा परब्रह्म श्रीरामजी हैं।

यों 'राम'-शब्द के अनन्त अर्थ होते हैं तथापि अतिसंक्षेप रूपसे ऐसा समझा जा सकता है-र-१-श्रीरामजी का प्रतिपादक २-श्रीरामजी प्रतिपाद्य तथा ३-श्रीरामजी जगत् के रक्षा करनेवाले हैं। अ-१-श्रीरामजी के अतिरिक्त अन्य किसी का भी यह जीव शेष नहीं है २-ब्रह्मादि देवों का भी यह जीव शेष नहीं है ३-श्रीरामजी को छोडकर अन्य किसी का शेष बनना या मानना भूल है तथा स्वरूप विरोधी है। ४-आचार्य द्वारा ही श्रीरामजी की प्राप्ति होती है। म-जीव है जो र कारवाच्य श्रीरामजी का शेषभूत है अतः श्रीरामजी जैसे चाहें इस शेषरूप जीव का उपयोग करसकते हैं।

जगदाचार्यजी से प्रबर्धित श्रीसम्प्रदाय के इष्ट-श्रीसीतारामजी हैं। मन्त्र द्रष्टा ऋषि श्रीजानकीजी हैं मन्त्र षडक्षर तारक महामन्त्र 'रां रामाय नमः' है। यों तो जीव-अनन्त हैं तथापि १-नित्य २-मुक्त ३-बद्ध ४-मुमुक्षु तथा ५-कैवल्य प्रभेद से पांच प्रकार के हैं। परब्रह्म श्रीरामजी के साथ जीवात्मा का ९-प्रकार का सम्बन्ध है-१-शेष-शेषी २-नियम्य-नियामक ३-पिता-पुत्र ४-पति-पत्नी ५-आधार-आधेय ६-सेव्य-सेवक ७-शरीर-शरीरी ८-धर्म-धर्मी तथा ९-रक्ष्य-रक्षक। यह श्रीरामानन्दीय श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के नाम से जगत विख्यात है। इसका धाम-नित्य दिव्य श्रीसाकेतधाम है यही श्रीअयोध्याजी के नाम से संसार में प्रसिद्ध है। क्षेत्र-नन्दिग्राम तथा परिक्रमा-श्रीचित्रकूट में कामदगिरि और मिथिला की है। सुखविलास श्रीचित्रकूट तथा तीर्थ-धनुष कोटि और गोत्र-अच्युत है विरक्तों का गृहस्थों का विरक्त सद्गुरु से दीक्षा लेने के वाद भी गोत्र नहीं वदलता है पहले का ही गोत्र रहता है। वर्ण-शुक्ल शाखा-अनन्त, मुक्ति-सायुज्य द्वार-श्रवण ऋषि-श्रीब्रह्माजी, मुनि-श्रीवशिष्ठजी, पार्षद देवता-श्रीहनुमानजी, वेद-ऋग्वेद, देवी-श्रीकमल में आसीन श्रीसीताजी, सिंहासन-शुद्ध रत्न सिंहासन, वंश-सूर्य वंश, तिलक-ऊर्ध्वपुण्ड्र तथा माला-श्रीतुलसीजी की है। बडी जगह-बडी जगह पञ्चगङ्गाघाट काशी तथा आचार्य-प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी यतिसम्राट्जी एवं आचार्यपीठ-महर्षि श्रीबोधायन स्थापित विश्रामद्वारका हैं। और धर्म-श्रीसीतारामीय श्रीवैष्णव है आहार-हरिनाम है, ध्येय-श्रीसीतारामजी, तथा ज्ञेय-श्रीमद्वाल्मिकीय श्रीमद्रामायण (और श्रीतुलसीदासजीकृत श्रीरामायण) है। तत्त्वत्रय-१-कृपा स्वरूप माया २-जीव ३-सर्वेश्वर श्रीराम ब्रह्म हैं। रहस्यत्रय १-महामन्त्र (रां रामाय नमः) २-चरममन्त्र (सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम) तथा ३-द्वय मन्त्र-

'श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये । श्रीमते रामचन्द्राय नमः' है । शरणागति मन्त्र 'श्रीरामः शरणं मम' तथा गायत्री-श्रीरामगायत्री 'ॐ दाशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्' है ।

卐 श्रीआनन्दभाष्यकारजी के पूर्वाचार्यों की शुभनामावली निम्न प्रकार से है 卐

१- सर्वेश्वर श्रीरामजी (अनादि-अनन्त होते हुये भी लोक लीलार्थ प्रादुर्भाव काल त्रेतायुग चैत्रशुक्ल श्रीरामनवमी के दिन अयोध्या में)

२- सर्वेश्वरी श्रीसीताजी (अनादि-अनन्त होते हुये भी लोक लीलार्थ प्रादुर्भाव काल त्रेतायुग वैशाख शुक्ल नवमी के दिन सीतामढी मिथिला में)

३- श्रीहनुमानजी (स्वपरमाराध्य श्रीरामजी के साथ लोक लीला सम्पादनार्थ प्रादुर्भाव काल त्रेतायुग कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी गन्धमादन पर्वत पर)

४- श्रीब्रह्माजी (भगवान् के संकल्पानुसार सृष्टि का प्रारम्भकाल अक्षयनवमी श्रीविष्णु के नाभिकमलाग्र भाग में आविर्भूत)

५- श्रीवशिष्ठजी (ऋषि पञ्चमी के दिन ब्रह्मलोक में प्रकट)

६- श्रीपराशरजी (आश्विन शुक्ल पूर्णिमा श्रीवशिष्ठ काल में उनके आश्रम में प्रकट)

७- श्रीबादरायण व्यासजी (पराशर काल में गुरुपूर्णिमा के दिन कालापी उ. प्र. में जन्म)

८- श्रीशुकदेवाचार्यजी (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा व्यासकाल में व्यासाश्रम में जन्म)

९- महर्षि बोधायन श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी वि.पू. ५६९-३२० पौषकृष्ण १२ बोधायनसर मिथिला में ।

१०- जगद्गुरु श्रीगङ्गाधराचार्यजी (माघकृष्ण एकादशी को आविर्भाव ४८९ वि.पू. तथा तिरोभाव २८९ वि.पू. माघशुक्ल पञ्चमी स्थान प्रतिष्ठानपुर प्रयाग)

११- जगद्गुरु श्रीसदानन्दाचार्यजी (आविर्भाव ३३७ विक्रमपूर्व माघशुक्ल पञ्चमी तिरोभाव ८० विक्रमपूर्व जन्मस्थल गढमुक्तेश्वर)

१२- जगद्गुरु श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी (आविर्भाव १३६ वि.सं. पूर्व वैशाख शुक्ल तृतीया तिरोभाव ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी वि.सं. २३६ जन्मस्थल कामदगिरि)

१३- जगद्गुरु श्रीद्वारानन्दाचार्यजी (आविर्भाव फाल्गुन पूर्णिमा वि.सं. १९६ द्वारका में तिरोभाव आषाढ शुक्ल तृतीया ३७६ वि.सं. में)

१४- जगद्गुरु श्रीदेवानन्दाचार्यजी (आविर्भाव वैशाखशुक्ल दशमी वि.सं., ३२६ में प्रयाग में तिरोभाव माघपूर्णिमा ५२६ वि.सं. में)

१५- जगद्गुरु श्रीश्यामानन्दाचार्यजी (आविर्भाव वि.सं. ४८६ जगन्नाथपुरी में तिरोभाव ६८६ आषाढशुक्ल तृतीया वि.सं. में)

१६- जगद्गुरु श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी (श्रावण शुक्ल सप्तमी ६३६ वि.सं. मिथिला में जन्म ८३६ वि.सं. श्रावण शुक्ल ७ में साकेत गमन)

१७- जगद्गुरु श्रीचिदानन्दाचार्यजी (चैत्र पूर्णिमा ७४६ वि.सं. चित्रकूट में जन्म ८९६ वि.सं. आश्विन शु. १२ में साकेतवास)

१८- जगद्गुरु श्रीपूर्णानन्दाचार्यजी (वैशाखकृष्ण त्रयोदशी ८६६ वि.सं. में अवन्तिका में जन्म वैशाख पूर्णिमा १०६७ वि.सं. में साकेतवास)

१९- जगद्गुरु श्रीश्रियानन्दाचार्यजी (वैशाखशुक्ल नवमी १०२६ वि.सं. में जनकपुर में जन्म १२०६ वि.सं. चैत्र शु. ९ में अन्तर्धान)

२०- जगद्गुरु श्रीहर्यानन्दाचार्यजी (आषाढ शुक्ल एकादशी ११५६ वि.सं. में कर्णपुर में जन्म साकेतवास १३५६ वि.सं. वैशाख शु. १२)

२१- जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी (चैत्रशुक्ल एकादशी १२०६ वि.सं. में अयोध्याजी में अवतार १३९६ वि.सं. वैशाख शु. ११ में तिरोभाव)

२२- वें स्वयं आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी (आविर्भाव माघकृष्ण सप्तमी १३५६ तिरोभाव चैत्रशुक्ल ९-१५३२) पूर्व विवरणानुसार आनन्दभाष्यकारजी २२ वें आचार्य हैं। अग्रिम अविच्छिन्न इस लेख के लेखक तक की आचार्य परम्परा निम्नानुसार है-

२३- जगद्गुरु श्रीभावानन्दाचार्यजी (आविर्भाव वैशाख कृष्ण ६ विक्रमसम्वत् १३७६ मिथिला में तिरोभाव ज्येष्ठ पूर्णिमा १५३९ वि.सं.)

२४- जगद्गुरु श्रीअनुभवानन्दाचार्यजी (आविर्भाव वसन्तपञ्चमी १५०३ काशी में तिरोभाव श्रीरामनवमी १६११ विक्रमसम्वत्)

२५- जगद्गुरु श्रीविरजानन्दाचार्यजी (आश्विन शुक्ल ९ विक्रमसम्वत् १५५० व्रज में आविर्भाव तिरोभाव श्रावण शुक्ल नवमी वि.सं. १७७५)

२६- जगद्गुरु श्रीआशारामाचार्यजी (हाथीरामजी) जन्मस्थान नागौर राजस्थान कार्तिक शुक्ल १२ विक्रमसम्वत् १५६५ तिरोभाव कार्तिक शुक्ल १२ वि.सं. १७६८)

२७- जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्यजी (आविर्भाव वैशाख पूर्णिमा विक्रमसम्वत् १७३३ तिरोभाव माघपूर्णिमा १७८९ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल कन्दरामनिक्कम-तंजौर)

२८- जगद्गुरु श्रीरघुनाथाचार्यजी (श्रावण अमावास्या १७५७ विक्रमसम्वत् अवतार तिरोभाव ऋषिपञ्चमी १८०७ जन्मस्थल लखना इटावा)

२९- जगद्गुरु श्रीविश्वम्भराचार्यजी (आविर्भाव चैत्रकृष्ण तृतीया १७७७ विक्रमसम्वत् तिरोभाव ज्येष्ठ शुक्ल दशमी १८२७ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल पूना)

३०- जगद्गुरु श्रीराघवेन्द्राचार्यजी (आविर्भाव चैत्रशुक्ल पञ्चमी १८०७ विक्रमसम्वत् तिरोभाव वैशाख शुक्ल नवमी १८३८ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल सिरसी बिहार)

३१- जगद्गुरु श्रीवैदेहीवल्लभाचार्यजी (जन्माष्टमी १८११ विक्रमसम्वत् तिरोभाव मौनी अमावास्या १८७१ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल पोखरा-नेपाल)

३२- जगद्गुरु श्रीकोसलेन्द्राचार्यजी (आविर्भाव रथसप्तमी १८३५ विक्रमसम्वत् तिरोभाव अक्षयतृतीया १८८५ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल रायगढ)

३३- जगद्गुरु श्रीरामकिशोराचार्यजी (आविर्भाव अनन्तचतुर्दशी १८५१ विक्रमसम्वत् तिरोभाव भाद्रपद चतुर्थी १९११ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल भुवनेश्वर)

३४- जगद्गुरु श्रीजानकीनिवासाचार्यजी (आविर्भाव माघकृष्ण सप्तमी १८५१ विक्रमसम्वत् तिरोभाव श्रावणशुक्ल सप्तमी १९१५ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल मलेरकोटला-पंजाब)

३५- जगद्गुरु श्रीसाकेतनिवासाचार्यजी (आविर्भाव चैत्रशुक्ल प्रतिपदा १८६७ विक्रमसम्वत् तिरोभाव ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी १९३५ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल मण्डी)

३६- जगद्गुरु श्रीजानकीजीवनाचार्यजी (आविर्भाव नागपञ्चमी १८७५ विक्रमसम्वत् तिरोभाव १९०२ श्रावण कृष्ण द्वितीया जन्मस्थल सुचीन्द्र-केरल)

३७- जगद्गुरु श्रीभरताग्रजाचार्यजी (अवतार माघी अमावास्या १८४८ वि.सं. साकेतवास वैशाख शुक्ल द्वितीया १९२३ विक्रमसम्वत् जन्मस्थल कुण्डराग्राम विदर्भ)

३८- जगद्गुरु श्रीहनुमदाचार्यजी (अवतार अक्षयतृतीया १९०७ विक्रमसम्वत् साकेतवास कार्तिक शुक्ल एकादशी १९७८ जन्मस्थल राजपीपला)

३९- महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्यजी वेदान्तकेसरी (अवतार विजयादशमी विक्रमसम्वत् १९४३ साकेतवास वसन्तपञ्चमी २००७ विक्रमसम्वत् अवतार स्थल मुरादाबाद) श्रीरघुवरीयवृत्तिकार ।

४०- जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी योगीन्द्र (काशी में प्रधान आचार्यपीठ आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ के संस्थापक अवतार श्रीरामनवमी विक्रमसम्वत् १९४४ तिरोभाव २०४६ भाद्र कृष्णनवमी) भाष्यदीपकार ।

४१- आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी (जन्म वैशाखशुक्ल ३ विक्रमसम्वत् १९८८ जन्मस्थल पूर्व नेपाल) भाष्य प्रकाशकार ।

आचार्यश्री के जनकल्याण कारक परमविरक्त प्रधान बारह शिष्य (महाभागवत) थे वे इसप्रकार हैं-१-जगद्गुरु श्रीअनन्तानन्दाचार्यजी २-जगद्गुरु श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी ३-जगद्गुरु श्रीसुखानन्दाचार्यजी ४-जगद्गुरु श्रीभावानन्दाचार्यजी ५-जगद्गुरु श्रीयोगानन्दाचार्यजी ६-जगद्गुरु श्रीनरहर्यानन्दाचार्यजी ७-जगद्गुरु श्रीगालवानन्दाचार्यजी ८-जगद्गुरु श्रीपीपाचार्यजी ९-जगद्गुरु श्रीरामकबीराचार्यजी १०-श्रीरमादासजी (रैदासजी) ११-श्रीधनाजी १२-श्रीसेनजी

जो द्वादश महाभागवत के अवतार होने से बारह सूर्य के समान तेजस्वी लोकोत्तर चमत्कारी तथा लोक कल्याण कारक थे।

卐 आनन्दभाष्य 卐

अनादि वैदिक विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रथम व्याख्याता भगवान् श्रीबोधायन श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी जो श्रीसम्प्रदाय के नवें आचार्य हैं के वृत्ति ग्रन्थ में प्रतिपादित सत् सिद्धान्त श्रौतविशिष्टाद्वैतमत का भाष्य ग्रन्थ द्वारा विशिष्ट प्रचारक एवं प्रसारक **प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का समय १३५६-१५३२** है जो भारतीय संस्कृत एवं सभ्यता के लिये विशिष्ट संकटापन्न काल था। जिसकी झांकी श्रीरामानन्दसम्प्रदाय का इतिहास, देशिकपरिचर्या, श्रीसम्प्रदाय दिग्दर्शन, आचार्यपरिचर्या, आचार्यमङ्गलध्वज महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्यजी का स्मृतिग्रन्थ, श्रीरामानन्दसम्प्रदाय का संक्षिप्त परिचय, एवं जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी तथा विजयपताका श्रीशेषमठ-शींगडा, श्रीरामानन्दसम्प्रदाय की पूर्व परम्परा का सांस्कृतिकपक्ष, प्रभृति ग्रन्थों में झांकी जा सकती है।

जगदाचर्यजी ने भारतीय सद्धर्म के स्वरूप को स्थायित्व प्रदान करने के लिये प्रस्थानत्रयों ब्रह्मसूत्र उपनिषदों एवं गीता में प्रसन्न प्रसाद गम्भीर भाष्यों की रचना की 'तद्गुणसारत्वात्तुतद्व्यपदेशप्राज्ञवत् ब्र.सू. २।३।३०।' इस शास्त्र के निर्देशानुसार '**आनन्दभाष्य**' नाम रखा। इस नामाभिधानानुसार ही 'आनन्दो ब्रह्म व्यजानात् 'आनन्दादेवखल्विमानि भूतानि जायन्ते' आनन्देन जातानि जीवन्ति आनन्दं प्रत्यभिसंविशन्ति' इत्यादि श्रुतियां संगत होती है। अतः भगवान् भाष्यकारजी ने अपने व्याख्यानों का नाम आनन्दभाष्य के रूपमें प्रसिद्ध कर सर्व साधक जनों को परमपद पथिक बनने के लिये सुगममार्ग का प्रदर्शन **श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर** द्वारा किये जो आनन्दभाष्यों का सारतत्व है। जिसमें मानव मात्र के लिए श्रीरामप्रपत्ति स्वीकार कर परमपद श्रीसाकेताधीशजी का कैङ्कर्य प्राप्त करने की आज्ञा प्रदान की गई है।

'सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणः सदा शक्ता अशक्ताः पदयोर्जगत्प्रभोः।
अपेक्ष्यते तत्र कुलं बलं च नो न चापिकालो न च शुद्धतापि वै'

श्रीवै.म.भा. ४।५० भास्कर के पूर्ण रहस्यों को जानने के लिये मेरी प्रभा एवं किरण टीका का स्वाध्याय करें।

भगवान् बादरायण व्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्रों की संख्या एवं अधिकरणों के विषयों में भी भाष्यकार आचार्यों में पर्याप्त मतभेद है। श्रीशङ्कराचार्यजी के मत में सूत्र संख्या ५५५ एवं अधिकरण संख्या १९९ है। श्रीरामानुजाचार्यजी के मत में सूत्र संख्या ५४५ तथा अधिकरण संख्या १६० है। श्रीमाध्वाचार्यमत में सूत्र संख्या ५६४ और अधिकरण संख्या २२३ है। श्रीनिम्बार्का चार्य मत में सूत्र संख्या ५४९ तथा अधिकरण संख्या १६१ है। श्रीविष्णु स्वामी

आचार्यजी मत में सूत्र संख्या ५५४ और अधिकरण संख्या १७१ है। पर श्रीबोधायनीयवृत्ति के अनुयायी जगदाचार्य श्रीरामानन्दाचार्यजी के सर्वशास्त्र सामञ्जस्य मतानुसार सूत्र संख्या ५५१ है जैसा कि अध्याय १-३२+३३+४३+२९-१३७। अध्याय २-३६+४५+५३+२१-१५५। अध्याय ३-२७+४१+६४+५१-१८३। अध्याय ४-१९+२०+१५+२२-७६। तथैव अधिकरण संख्या १६० है जैसे कि अ. १-११+७+१२+८-३८। अ. २+१०+८+९+९-३६। अ. ३-६+८+२५+१५-५४। अ. ४-११+१०+५+६-३२।

ब्रह्मसूत्रों में चार अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। उन पादों में वर्णित अतिसूक्ष्म विषय इसप्रकार है-१-१ पाद में अस्पष्टतर जीवों के स्वरूप का विचार है। २-पाद में पुनः अस्पष्ट जीवों के विषय में चर्चा है। ३-पाद में स्पष्ट जीवादि के स्वरूप की चर्चा है। ४-पाद में स्पष्टतर जीवादि के विषय में चर्चा है। २-१ पाद में सांख्यादि स्मृति विरोध एवं न्यायशास्त्र विरोध का परिहार है। २-पाद में सांख्यादि अनुकूल तर्कों का वेदवेदान्तानुसारि सत् तर्कों द्वारा निराकरण है। ३-पाद में वियदादिकों का कार्यत्व का समर्थन है। ४-पाद में इन्द्रियादिकों का कार्यत्व निरूपण है। ३-१ पाद में ब्रह्म की उपासना विषयक इच्छा निरूपण के लिए जागर आदि अवस्थाश्रय जीव के दोषों का निरूपण है। २-पाद में परमपुरुष श्रीरामजी का उभयलिङ्गत्व का निरूपण है। ३ पाद में ब्रह्म के उपासनात्मक भेदों का निरूपण है। ४-पाद में उपासना का वर्णाश्रम धर्म के साथ सामञ्जस्य का प्रतिपादन है। ४-१ पाद में श्रीरामोपासना के फल प्रतिपादन के लिए उपासना के फल निरूपण पूर्वक ब्रह्मोपासना का प्रकार एवं विद्या के माहात्म्य का भी विवेचन किया गया है। २-पाद में श्रीरामोपासकों का परधाम श्रीसाकेत में जाने के प्रकार का निरूपण है। ३-पाद में अर्चिरादेमार्ग का साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर अर्चिरादिमार्ग से ही श्रीरामोपासकों का श्रीरामधाम प्राप्ति का वर्णन है। ४-पाद में अर्चिरादि मार्ग से श्रीसाकेत-ब्रह्मलोक गये मुक्त जीवों का श्रीरामसायुज्य प्राप्तिरूप मोक्ष का प्रतिपादन है।

तो भगवान् भाष्यकारजी के मत का स्वरूप को संक्षेप में यों समझा जा सकता है जगद्गुरुजी ने श्रीरामशरणागति-प्रपत्ति एवं अनन्याभक्ति को मोक्ष-सायुज्य मुक्ति का कारण माना है। परब्रह्म श्रीरामजी को जगत् का अभिन्न निमित्तोपादान कारण माना है। जीवों का परस्पर भेद एवं नानात्व स्वीकारा है। एवं जीवों का स्वरूपतः अणुत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व और नित्यत्व माना है तथा जीवों का ब्रह्म से भेद माना है। विद्या में उपकारिका वर्णाश्रम व्यवस्था स्वीकार किया है। विवर्तवाद मायावाद प्रतिविम्बवादों का असकृत् प्रत्याख्यान किया है। नारदपञ्चरात्र आगम शास्त्र का सम्पूर्णतया प्रमाण माना है। निर्विशेष ब्रह्मवाद का श्रुति-स्मृति प्रामाण्य पुरस्सर अनेकवार अनेक स्थलों पर निराकरण कर सर्वशास्त्र सम्मत सविशेषवाद का घटाटोप के साथ प्रतिपादन किया है। जगत् के मिथ्यात्व एवं भावरूप अनिर्वचनीय अविद्या का सर्वशस्त्रानुकूलतया खण्डन किया है। तथा सत्ख्यातिवाद को स्वीकार किया है।

卐 आनन्दभाष्य का मत 卐

भाष्यकारश्री ने विशिष्टाद्वैत मत को ही उपनिषद् तथा ब्रह्ममीमांसा शास्त्र का अभिमत माना है। **'अत्र जगत्पदेन भोक्तृभोग्ययोः ईशेत्यनेन ईश्वरस्य च कथनात् चिदचिदीश्वर रूपं तत्त्वत्रयमीशेशितव्यभेदश्च उक्तोभवति**-ईशावास्योपनिषदानन्दभाष्यम् १' **'एवञ्चाखिलश्रुतिस्मृतीतिहासपुराणसा मञ्जस्यादुपपत्तिबलाच्च विशिष्टाद्वैतमे वास्य ब्रह्ममीमांसाशास्त्रस्यविषयो न तु केवलाद्वैतम्'** आनन्दभाष्य १।१।१ यानी विशिष्टाद्वैत मत ही श्रुति स्मृति इतिहास एवं पुराण से सामञ्जस्य होता है तथा युक्ति युक्त भी यह सिद्धान्त है केवलाद्वैत नहीं। विशिष्टाद्वैत शब्द का अर्थ इसप्रकार से होता है-विशिष्टं च विशिष्टं च विशिष्टे विशिष्टयोरद्वैतं विशिष्टाद्वैतं। प्रथम विशिष्ट शब्द से सूक्ष्म चिदचिद् विशिष्ट ब्रह्म यानी कारण ब्रह्म का ग्रहण होता है एवं द्वितीय विशिष्ट शब्द से स्थूल चिदचिद् विशिष्ट ब्रह्म यानी कार्य ब्रह्म का ग्रहण होता है। अतः विशिष्टाद्वैत का अर्थ हुआ कार्य ब्रह्म एवं कारण ब्रह्म की एकता यानी कार्य एवं कारण दोनों में एकता इस तत्व को आचार्यश्री ने **'तदनन्यत्व मारम्भणशब्दा दिभ्यः'** ब्र.सू. २।१।१४ के भाष्य में अच्छी प्रकार से समझाया है। इस विषय का विस्तृत विवेचन श्रीरामानन्दसम्प्रदाय के ३९ वें आचार्य महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्यजी ने **'विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त'** एवं **विशिष्टाद्वैत सिद्धातनुसार** में किया है तथैव श्रीरामानन्दसम्प्रदाय के ४० वें आचार्य जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी ने **तत्त्वत्रयसिद्धि** एवं **वेदार्थचन्द्रिका** में तथा मैंने **तत्त्वदीप** एवं **प्रकाश-किरण** में किया है एवं **श्रीवैष्णवमताब्ज भास्कर व्याख्या प्रभा-किरण चिदात्ममीमांसा** प्रभृति दिव्य प्रबन्धों में विशेष चर्चा किया हूं अतः विशेषार्थी वहीं देखें विस्तारभय से अन्य उदाहरण नहीं दे रहे हैं।

卐 आनन्दभाष्य में ब्रह्मपदवाच्य श्रीरामजी हैं 卐

'जगत्सृष्टौ परमेश्वरः श्रीरामः साधारणं कारणमसाधारणं कारणन्तु तत्तज्जीवानां तादृशं कर्मैव यस्य यादृशं कर्म तस्य तादृशीमेव योनिंप्रयच्छति तदीयकर्मसाहाय्यम वाप्येश्वरः बृ. उ. अ. १ ब्रा. २ म. १'

'यद्यप्यन्यत्रात्मशब्दस्य जीवपरकत्वं दृष्टं तथापि 'आत्मैव वेदमग्रे'

इतिवाक्यकारणवाक्यतया श्रीसाकेताधिपतिद्योतकत्वमेव...बहुषु स्थलेषु पुरुषशब्दस्य परमेश्वरे श्रीरामे प्रयोगदर्शनात् बृ. उ. अ. ब्रा.४ मं.१'

'....परमेश्वरश्रीरामस्य सर्वान्तर्यामित्वाद् भोक्तृत्वस्य प्रतिषेधात्...बृ. उ. अ. १ ब्रा. ४ मं. ७'

'अथ तथापि सर्वशक्तिसम्पन्नः सर्वसर्जकश्रीसाकेताधिपतिस्तान् तान् सर्वानेव बाह्यार्थान् सृजते समुत्पादयति बृ. उ. अ. ४ ब्रा. ३ मं. १०'

'ब्रह्मैवेत्यत्र ब्रह्म+आ+इव इतिच्छेदः । सादृश्यार्थक इवशब्दस्ततश्च ब्रह्म सदृशसनाविर्भूतगुणाष्टकत्वादाविर्भूतब्रह्मस्वरूपसन् जीवो ब्रह्मणि परब्रह्मणि श्रीरामे लीनोजायते बृ. उ. अ. ४ ब्रा. ४ मं. ६'

'एतादृशं विज्ञानानन्दरूपं ब्रह्मसाकेताधिपतिर्भगवान् राम एव 'वीजं हि सर्वभूतानां सीतानाथः परेश्वरः । रामं विना न किञ्चिद्धि वर्तते हि चराचरम्' इत्याचार्योक्तेः बृ. उ. अ. ३ ब्रा. ९ मं. ७।२८'

'ब्रह्मपदाभिधेयं भगवन्तं श्रीरामं प्रोवाचोक्तवान् श्वे. उ. ६।२१'

'ज्ञानयोगकर्मयोगविज्ञेयं देवं देवपदाभिधेयं भगवन्तं श्रीरामं ज्ञात्वा सर्वे च ते पाशाः सर्वपाशास्तैरखिलैः पाशवद्बन्धनकारकैः कर्मभिर्मुक्तोभवति श्वे. उ. ६।१३'

'ईशं सर्वेश्वरं भगवन्तं श्रीरामस्य महिमानमखिलजगन्नियमनरूपं यदा पश्यत्यव लोकयति तदा बीतशोकः...श्वे. उ. ३।२०'

इत्यादि श्रुतियों के व्याख्यान सामञ्जस्य से यह अतिस्पष्ट हो जाता है कि आनन्दभाष्यकारजी के मतानुसार सर्जक पालक तथा संहारक सर्वेश्वर श्रीरामजी ही परात्पर ब्रह्म हैं एवं ध्येय ज्ञेय और उपास्य भी वेही हैं अन्य नहीं । एवमेव-

'ब्रह्म शब्दश्च महापुरुषादिपदवेदनीयनिरस्तनिखिलदोषमनवधिकाति शयासंख्येयकल्याणगुणगणं भगवन्तं श्रीराममाह सामान्यवाचकानां पदानां विशेषे पर्यवसानात्' आनन्दभाष्य १।१।१ यानी सामान्य वाचक पदों का विशेष अर्थ में समाप्ति होने से इस ब्रह्ममीमांसा सूत्र में ब्रह्म शब्द महापुरुष एवं उत्तमपुरुष आदि पद से वाच्य समस्त दोषों से रहित निरबधिक तथा अतिशय से रहित असंख्य कल्याण गुणों के आश्रय भगवान् श्रीरामजी को ही कहता है, अर्थात् इस शारीरक

मीमांसा शास्त्र के विषय में ब्रह्म शब्द उक्त विशेषण विशिष्ट सर्वेश्वर श्रीरामजी का ही वाचक है। क्योंकि व्यापकत्व के योग से ब्रह्म शब्द सामान्य वाचक पद है और श्रीरामजी विशेषार्थ हैं। इसप्रकार भाष्यकारजी ने ब्रह्म शब्द का वाचक सर्वेश्वर श्रीरामजी का प्रतिपादन किया है।

तथैव **'एवञ्च सर्वज्ञसर्वशक्तिमज्जगत्कारणनिर्गुणसगुणादिपदवाच्यं श्रीरामतत्त्वं तदेव जगत्कारणं ब्रह्मेत्युच्यतेऽनेन सूत्रेण** आ. भा. १।१।२ यानी इसप्रकार सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् जगत्कारण निर्गुण एवं सगुण आदि पदों का वाच्य श्रीरामतत्त्व है वही जगत्कारण ब्रह्म है जो जन्माद्यस्ययतः सूत्र द्वारा कहा गया है। इसीप्रकार आगे १।१।४ प्रभृति अनेक सूत्रों द्वारा श्रीराम तत्व का ही विवेचन किया गया है, विशेषार्थी वहीं देखें।

卐 आनन्दभाष्य एवं सगुण निर्गुण ब्रह्म 卐

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी ने ब्रह्म को निर्गुण तथा सगुण दोनों ही माना है। आचार्यजी ने निर्गुण शब्द का-

'सत्वादयो न सन्तीशे यत्र च प्राकृतागुणाः। स शुद्धः सर्वशुद्धेभ्यः पुमानाद्य प्रसिदतु वि. पुराण 'योऽसौनिर्गुणप्रोक्तः शास्त्रेषु जगदीश्वरः। प्राकृतैर्हेय सत्वाद्यैर्गुणैर्हीनत्त्वमुच्यते प. पुराण। यानी जिसमें सत्वादिक प्रकृति के गुण नहीं हैं। एवं सर्व शुद्ध पदार्थों से शुद्ध वह आदि पुरुष है। जो जगदीश्वर शास्त्रों में निर्गुण रूपसे कहा गया है वह त्याग करने योग्य प्रकृति के सत्वादि गुणों से हीन कहा गया है। इत्यादि शास्त्र सम्मत **'निर्गता निकृष्टा संत्वादयः प्राकृता गुणा यस्मात्तन्निर्गुण मिति व्युत्पत्तेर्निकृष्टगुणराहित्यमेव निर्गुणत्वम्'** आ. भा. १।१।२ अर्थात् निर्गत है निकृष्ट सत्वादि प्राकृतिक गुण जिससे वह निर्गुण है इसप्रकार गूढ रहस्यमय अर्थों का प्रतिपादन कर श्रुति का समन्वय पूर्वक एक ही ब्रह्म तत्त्व को निर्गुण एवं सगुण माना है। यदि निर्गुण तथा सगुण को एक ही नहीं मानते तो **'परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविको ज्ञानबलक्रिया च। एवं निर्गुणं निष्क्रियम्'** आदि श्रुतियों का सामञ्जस्य नहीं हो पाता अतः **दिव्यगुणसत्वेन च सगुणत्वमित्युभयमेकस्य ब्रह्मणोनिर्देश इति न किञ्चिदनुपपन्नम्** आ.भा. १।१।२ लिखा है। उसी तत्व को स्फुट करते हुये आगे लिखते हैं किञ्च **श्रीरामस्य**

जगत्कारणत्व वादिन्यः काश्चनश्रुतयः स्फुटकारणस्वरूपस्य तस्य साकारत्वं सगुणत्वमक्षरब्रह्मणो जगत्कारणत्व वादिन्यश्काश्चनकाश्चनश्रुतयस्तस्याक्षरस्य निराकारत्वं निर्गुणत्वञ्चाहुरित्युभयत्राविरोधार्थः स एवार्थस्तान्त्रिकैरङ्गीकर्तव्यः अन्यथा परस्परविरोधे व्याहतत्वादप्रामाण्यमेवनिष्पद्येत एवं श्रीरामादिविशेष पदवाच्यस्यदिव्यगुणवत्वेन च सगुणत्वनिर्गुणत्वज्ञापनादिति न क्वापि ब्रह्मणो गुणशून्यत्वं निर्विशेषत्वञ्चेति मन्तव्यम् आ.भा. १।१।२ इत्यादि रूपसे समस्त वेदान्त दर्शन को सगुणरूप श्रीरामजी का प्रतिपादक रूपतया निरूपण किया है।

卐 आनन्दभाष्य के अनुसार सद्य मुक्ति नहीं 卐

'तदोकोऽप्रज्वलनं तत्प्रकाशितद्वारोविद्यासामर्थ्यात् तच्छेषतावगमात् तच्छेषगत्यनुस्मृतियोगाच्चहार्दानुगृहीतशताधिकया' ४।२।१६ के प्रसङ्ग में भाष्यकारजी लिखते हैं-विद्या सामर्थ्य से यानी परमात्मोपासनरूप विद्या सामर्थ्य से एवं परमात्मा के शेषत्व के अनुसन्धान से साधक जीवात्मा ईश्वर से अनुगृहीत होता है। इसी विषय का निर्देश पहले जन्माद्यधिकरण में भी किया गया है इसी सगुण ब्रह्म श्रीरामजी के निरवच्छिन्न ध्यान एवं अभ्यास वाले साधक एक सौ एकवीं सुषुम्ना नाडी द्वारा शरीर से निकलकर अर्चिरादिमार्ग से ब्रह्मलोक-श्रीसाकेतलोक को प्राप्त हुए। अनन्य भक्त की मुक्ति प्रतिपादित की गई है। विद्या सामर्थ्यात् यहां पर विद्यापद से जिसकी मरण से पूर्व आवृत्ति की गई है उसी ब्रह्म का निदिध्यासनरूप परमात्मा श्रीराम चिन्तन पदवाच्य विद्या का ग्रहण है यही सूत्रकार श्रीव्यासजी का मार्ग है। अतः जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के मत में सद्यमुक्ति नहीं है अर्चिरादिमार्ग से क्रममुक्ति ही है। पुनः आपने लिखा है-**एतेन सद्योमुक्तेरभा वोऽपि व्यक्तो भवति** यानी इससे ज्ञानी को सद्यमुक्ति का अभाव है अर्थात् सद्योमुक्ति नहीं होती है यह व्यक्त होता है। पुनः आगे **अर्चिरादिमार्गेण ब्रह्मलोकगमनत्व ज्ञापनात् सद्यो न मुक्तिब्रह्मविदाप्पितु देवयानक्रमेणैवेति सिद्धान्तः** लिखकर प्रकृत प्रसङ्ग को पुष्ट किया गया है। अतः अर्चिरादिमार्ग से क्रममुक्ति शास्त्र सम्मत है सद्यमुक्ति नहीं यह भाष्यकारजी का सिद्धान्त है।

अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्मसमश्नुते प्रभृति श्रुति का आश्रय लेकर सद्यमुक्ति का जो समर्थन किया जाता है इसका निराकरण **'न तस्य प्राणा उत्क्रान्ति'**

प्रभृति माध्यन्दिनीय श्रुति के द्वारा निराकरण कर निगमन रूपसे **इति न केनापि प्रमाणेन सद्योमुक्तिः सिद्ध्यतीति मनीषिभिर्विभावनीयम्** आ.भा. १।१।२ यानी किसी भी प्रमाण से सद्योमुक्ति सिद्ध नहीं हो सकती है यह बुद्धिमानों को विचार करना चाहिये। यह अतिसंक्षेप में बताया गया है, विशेष भाष्य एवं भाष्यदीप दीप-प्रकाश टीका आदि ग्रन्थों से अवगत कर लें।

॥ श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः ॥

सिंहावलोकन

भारतीय शास्त्र भण्डार का सर्वोत्कृष्ट रत्न **श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी** की अन्तिम कृति है। जो भाष्यकारजी के दिग्विजय प्रसङ्ग में द्वारका-विश्रामद्वारकादि स्थलों की यात्रा को सम्पन्न करते हुये अर्वुदाचल-आबू पर्वत पहूंचने एवं वहां प्रतिपक्षियों के साथ दार्शनिक विवाद में विजयश्री को स्वीकार कर सर्वेश्वर श्रीरघुनाथजी के अर्चाविग्रह के प्रतिष्ठा प्रसङ्ग में श्रीआचार्यजी के प्रमुख द्वादश शिष्यान्यतम जगद्गुरु श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी के **'तत्वं किम्'** आदि दश प्रश्नों के उत्तर के रूपमें ग्रथित हुआ है, प्रश्नानुरूप दश विभागों में विभक्त है।

प्रथम परिच्छेद में ९ श्लोक हैं। १-श्रीराम विषयक मङ्गलाचरण परक है। २-रा-श्रीसीताजी विषयक एवं ३-रा-श्रीराम शस्त्रास्त्र सङ्गों के चमत्कार वर्णन परक है। ४-था जगद्गुरु श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी का दश प्रश्नात्मक है जो १-तत्व क्या है २-जप्य महामन्त्र कौन है ? ३-ध्येय तत्त्व कौन है ? ४-मोक्ष का कारण क्या है, ५-मुख्य धर्म कौन है, ६-वैष्णव कितने प्रकार के होते हैं, ७-उनका लक्षण क्या है, ८-कालक्षेप कैसे करना ९-निवास कहां करना एवं १०-प्राप्य तत्त्व क्या है ? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर जगदाचार्यश्री की पूर्वाचार्य नमस्कारात्मक शिष्य सावधान परक प्रतिज्ञारूप वाणी है ५ वें श्लोक में आचार्यश्री ने छठे श्लोक में अति स्पष्ट रूपसे प्रकृति का निरूपण किया है जो ऐसा संक्षिप्त एवं सुस्पष्ट वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। ७ वें में सर्वशास्त्र सम्मत जीव स्वरूप का विवेचन किये हैं। इस वर्णन शैली को देख, दार्शनिकों का मन मुग्ध हो जाता है कि जीवों के स्वरूप को एक ही श्लोक में गूंथ दिया गया है। ८-एवं ९ वें में ईश्वर सर्वेश्वर श्रीराम तत्त्व का निरूपण किया गया है।

यों **'तत्वं किम्'** ? प्रश्न का जवाव देकर **'जाप्यं किम्'** ? का जवाव दूसरे

परिच्छेद में ४५ श्लोकों से दिया गया है। उसमें एक श्लोक जप्यात्मक रहस्य श्रीमन्त्रराज मन्त्ररत्न एवं चरममन्त्र का संक्षिप्त निरूपण कर २ रे से २३ वें तक मन्त्रराज का साङ्गोपाङ्ग वर्णनकर २४ से ३५ तक में श्रीमन्त्ररत्न का निरूपण किया गया है। अनन्तर ३६ से ४५ तक के श्लोकों में चरममन्त्र का निरूपण हुआ है।

ध्यानं किम् ? इस ३ रे प्रश्न के उत्तर में ६ श्लोकों से सर्वेश श्रीरामजी का सपरिकर ध्यान का निरूपण कर '**मुक्तेः साधनं किम्**' ? इस ४ थे प्रश्न के समाधानार्थ ५९ श्लोकों का ग्रथन हुआ है। जिसमें दो श्लोकों में संक्षिप्त संस्कार का निरूपण कर ३ से ६ तक ४ श्लोकों से गुरु के लक्षण का निरूपण हुआ है जगदाचार्यश्री के आदेशानुसार-सायुज्य मुक्ति प्राप्ति हेतु साधकों को जीतेन्द्रिय पवित्र शास्त्रीय-साधावेश धारक अच्छे कुल में उत्पन्न सदाचार परायण नम्र शास्त्रों को जाननेवाला सदुपदेश देने में पटु विरक्त आश्रम में स्थित श्रीरामजी के ध्यान में संलग्न विशुद्ध बुद्धि वाले निग्रह तथा अनुग्रह में समर्थ को आचार्य-गुरु बनाना चाहिये पर हीन अङ्ग वाला अन्धा हाथ पैर आदि विना का अधिक अंग वाला कपटी काला दाँत वाला आँख का रोगी कुष्टी निरर्थक बहुत बोलनेवाला वामन व्यसनी-गांजा भांग बीडी सिगरेट अफीम खैनी आदि व्यसन वाला बहुत सोने वाला खराव नाखून वाला बहुत खाने वाला को किसी भी स्थिति में आचार्य-गुरु नहीं बनाना चाहिये। ७ एवं ८ से शिष्य लक्षण बताकर ९ से १४ श्लोकों से शिष्य संस्कार मन्त्रोपदेश एवं भक्ति का स्वरूप तथा नवधा भक्ति का उपदेश किये हैं। मुक्ति के साधन में अंगभूत व्रतों में एकादशी व्रत का निर्णय १५ से २६ तथा श्रीरामनवमी व्रत निर्णय २७ से २९ एवं श्रीजानकी नवमी व्रत निर्णय ३०-वें से कर ३१ वें से श्रीहनुमज्जन्ती व्रत को बताकर ३२-से श्रीनृसिंह जयन्ती व्रत का निर्णय किये हैं अनन्तर ३४ से ३७ तक में श्रीकृष्णाष्टमी व्रत निर्णय कर ३८ से ४१ तक में श्रीवावन द्वादशी व्रत का निर्णय किये हैं वाद में ४२ से ४९ तक में यथातथ्य विस्तार पूर्वक सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी की कृपा आदि भेदों का निरूपण किये हैं। इसी प्रसङ्ग में जगदाचार्य श्री लिखते हैं-

'सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणः सदा शक्ता अशक्ता पदयोर्जगत्प्रभोः।
अपेक्षते तत्र कुलं बलं च नो न चापि कालो न च शुद्धतापि वै' ॥-४।५०

यानी यह जगदाचार्यश्री की दिव्य घोषणा है कि श्रीरामजी के प्रपत्ति के अधिकारी मानव मात्र है, इसमें किसी वर्ण विशेष या जाति विशेष मात्र का अधिकार नहीं, घोषणानुरूप कार्य में परिणत भी करके जगत् को बता दिये जिसका उदाहरण श्रीकबीरदासजी श्रीरमादासजी प्रभृति हैं जिसका उल्लेख इतिहासकारों ने स्वर्णाक्षरों में किया है। इससे यह स्पष्ट है कि जगद्गुरुत्वपना आनन्दभाष्यकारजी में ही वस्तुतः घटित है, अन्यों में नहीं।

५१ से ५९ श्लोकों से श्रीरामप्रपत्ति स्वीकार किये साधकों का सम्मानपूर्वक श्रीरामशेषत्व की भावना से वेदविहित धर्माचरण द्वारा श्रीराम सायुज्य प्राप्त करने का निर्देश है।

एकः धर्मः कः ? इस ५ वें प्रश्न के उत्तर में १८ श्लोक ग्रथित हुये हैं। जिसमें चार श्लोकों तक सामान्यतः अहिंसा धर्म का निरूपण कर ५ वें से १० तक विशेष श्रीवैष्णव विरक्त धर्म का निरूपण किया गया है अनन्तर ११ वें से १८ तक श्रीरामजी के अर्चावतारों के स्वरूपों एवं षोडषोपचार पूजन प्रार्थना तथा दण्डवत् प्रणाम का निरूपण है। अनन्तर **वैष्णवाः कतिधाः ? इस छ ठे** प्रश्न के उत्तर में वेद, स्मृति आदि शास्त्रों से अनुमोदित जीवों के बद्ध, मुक्त, नित्य आदि अनेक भेद प्रभेदों का निरूपण २१ श्लोकों में किये हैं। वाद में **लक्षणं किञ्चेत षाम् ? इस सातवें** प्रश्न के समाधान में ८ श्लोकों का अवतरण हुआ है, जिसमें श्रीवैष्णवों के उर्ध्वपुण्ड्र तिलक तुलसी की कण्ठी धारणीय वस्त्र-कटिवस्त्र आदि विशुद्धवेश का यथाशास्त्र निरूपण हुआ है।

कालक्षेपः कथम् ? इस ८ वें प्रश्न के विषय में ९ श्लोकों का अवतरण हुआ है। जिनमें नित्यकर्म स्नानादि से निवृत्त होकर सर्वेश्वर श्रीरामजी की प्रातः मध्याह्न एवं सायंकाल में यथोपचार सामग्री से आराधना कर श्रीमद्रामायण पुरुषसूक्त महाभारत, पूर्वाचार्यों से प्रणीत दिव्य प्रबन्धों एवं जगद्गुरु श्रीरामनन्दाचार्य प्रणीत प्रस्थानत्रयों के आनन्दभाष्यों के स्वाध्याय तथा प्रवचन से काल-समय का क्षेप-यापन करने का उपदेश हैं। यदि स्वतः अध्ययन में अक्षम हों तो इनकी कथा सुनें। कथा सुनानेवाले श्रीवैष्णव की अनुकूलता न हो तो श्रीगुरुदेवजी से सविधि प्राप्त मन्त्रों का जप मनन एवं सपरिकर श्रीरामचन्द्रजी की ईर्ष्या रहित होकर कैङ्कर्य करते हुये अपना समय व्यतीत करे-

'रामस्य साङ्गस्य स पार्षदस्य सीतासमेतस्य सहानुजस्य ।
कैङ्कर्यमीर्ष्यारहितः प्रकुर्वन् क्षिपेत् स्वकालं सततं सुभक्तः ॥'

आप्यः किम् ? इस ९ वें प्रश्न के समाधान में १० श्लोकों का ग्रथन हुआ है जिसमें अर्चिरादिमार्ग द्वारा इन्द्र ब्रह्मादि प्रत्येक देवों से सत्कृत होता हुआ जीवात्मा श्रीरामजी का कैङ्कर्यरूप सायुज्य प्राप्त कर लेता है। उस विषय का सर्वशास्त्रानुमोदित तात्विक वर्णन हुआ है। प्राप्य श्रीराम स्वरूप का वर्णन करते हुये आचार्यश्री कहते हैं-

श्रीमान् दिव्यगुणाब्धिरौपनिषदो हेतुः शरण्यः प्रभुः
देवेशो जगतामनादिनिधनो ब्रह्मादिदेवार्चितः ।
तारार्कानलचन्द्रमोबहुमहः सौदामिनीभासको
ऽजय्यो वीरसपत्नशस्त्रनिचयै र्जेता च तेषां मुहुः ॥९-२॥
नित्यो ब्रह्मविधायकश्च पुरुषो वेदप्रदो ब्रह्मणे
नित्यानां शरणं तपः प्रभृतिभिः सद्योगिनां दुर्लभः ।
एकश्चेतनचेतनो भृतजगद् ध्येयः स्वतन्त्रोवशी
स प्राप्योऽस्ति मुमुक्षुभिः सुगुरुभिः सत्सङ्गिभिस्तत्परैः ॥९-३॥

यानी **'परमात्मा नराकृतिः'** वचनानुसार जो द्विभुजाकार से विद्यमान हैं एवं सर्वावतारी होने से पुरुष पदवाच्य हैं। श्रीमान् धन धान्यादि रूप श्री से सदा सम्पन्न हैं। अथवा श्री पदवाच्य विदेह कन्या श्रीजानकीजी से सदा नित्ययुक्त हैं। तथा हेय प्रत्यनिक सर्वज्ञत्व वात्सल्यादि अनन्त कल्याण गुणों के सागर रूप हैं। एवं स्थूल सुक्ष्म साधारण चाराचर जगत् का अभिन्न निमित्तोपादन कारण हैं। तथा शरण्य हैं- अर्थात् शरण में आये हुये प्रपन्न पुरुषों के पालक हैं **'सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम'** यह दिव्य वाणी सर्वाभयप्रद श्रीरामजी की है। तदनुरूप शरण में आये सभी को अभय प्रदान करनेवाले हैं और समस्त जगत् का सर्ग करने की शक्ति से युक्त हैं, एवं ब्रह्मादि देवों के भी ईश्वर (शासक) हैं। सर्वोत्पादक होने से स्वयं उत्पत्ति विनाश रहित हैं तथा सुरोत्तम ब्रह्मा हिरण्यगर्भ एवं इन्द्रादिक देव श्रेष्ठों से भी पूजित हैं तथा सूर्य चन्द्रमा तारागण विद्युत तथा अग्नि के भी प्रकाशक हैं, श्रुति का भी यही कहना है **'न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमाविद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं**

तस्यभासा जगदिदं विभाति' तथा जो वीर शत्रुओं के अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्र समूहों से अजेय हैं एवं उन शत्रुओं के ऊपर वारम्वार विजय प्राप्त करने वाले हैं। एवं **'सर्वेषामवताराणामवतारीरघूत्तमः'** इस आगम प्रमाणानुसार श्रीवराह एवं नृसिंह अवतार लेकर हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकशिपु पर विजय प्राप्त किये तथा श्रीरामादि अवतारों में रावणादि का अन्त किये। तथा जो चेतन के जो बद्ध मुक्त नित्य भेद हैं, वे भिन्न भिन्न उन मुक्त जीवों के भी चेतनरूप हैं क्योंकि श्रुति कहती है **'नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानाम्'** अर्थात् नित्य रूपतया प्रसिद्ध जो परमाणु, आकाश एवं जीवराशी हैं इनसे भी नित्य हैं। तथा जो एक है यानी सजातीय दूसरे से रहित हैं। क्योंकि श्रीरामजी में स्वकीय इच्छामात्र से सर्व वस्तुओं के साधक वाधक शक्ति होने से सहायकान्तर निरपेक्षत्व है। एवं जो जगत् भृत है जगत् का पोषण तथा रक्षण करनेवाले हैं। तथा जो ब्रह्म चतुर्मुख को सर्गादिकाल में उत्पन्न करके उन्हें वेद पढाने वाले हैं। **'यः सर्वज्ञः सः सर्ववित्'** श्रुति के वचनानुसार जो सर्वज्ञ एवं सर्वविद् हैं। एवं तपस्या आदि से श्रेष्ठत्व प्राप्त योगियों से भी दुर्लभ हैं। तथा सभी को वश में रखनेवाले हैं या सर्व प्रकाशशील कान्तिमान् हैं एवं जो स्वतन्त्र है एतादृश क्लेश कर्म विपाकाशयों से अपरामृष्ट पुरुष विशेष रूपसे सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी हैं वे भगवत्परायण सत्संगी आचार्यवान् मुमुक्षुजनों से ध्यान करने योग्य उपर्युक्त सर्वेश श्रीरामचन्द्रजी हैं, इतर नहीं यह अति संक्षेप से कहा गया है विशेष जिज्ञासुओं को मेरी प्रभा एवं किरण टीकाओं को देखना चाहिए।

कुत्र कार्यो निवासः ? इस दसवें प्रश्न में आचार्यश्री ने १५ श्लोकों द्वारा श्रीअयोध्या प्रभृति ४६ अति उत्तम तीर्थस्थानों का वर्णनकर उन तीर्थों के अधिष्टातृ देवों में सर्वेश श्रीरामचन्द्रजी की ही भावना करके उनकी आराधना के साथ श्रीरामचन्द्रजी की आराधना करते हुये निवास करने का आदेश दिये है। १५ वें श्लोक के आदि शब्द से पद्मपुराणादि में वर्णित निवास योग्य १०८ तीर्थों का संग्रह समझ लेना चाहिये।

कतिपय विद्वानों का मत है कि पुराणोक्त सभी तीर्थ यहाँ परिगणित थे, सम्भव है कि वे ही श्लोक रहे हों या तीर्थ नामके सूचक आचार्य कीर्ति श्लोक कालक्रम से लिपिकादिकों के दोष से स्खलित हो गये हों। यों भारतीय ऋषिशास्त्र परस्पर में एक दूसरे का पूरक होता है। पुराण रचयिता श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय)

के ही ७-वें आचार्य हैं तो भास्कर रचयिता २२ वें आचार्य, पूर्वाचार्योपदेश से ही कलिगत धर्म को लक्ष्यकर संक्षेप दृष्ट्या ४६ तीर्थों का ही जगदाचार्यश्री ने उपदेश किया हो। कुछ हो, भास्कर के १०।१५ वें श्लोक के आदि शब्द से पुराणोक्त तीर्थों का संग्रह करलेने से सव समञ्जस है।

अनन्तर ४ श्लोकों से इस दिव्य प्रबन्ध का महत्व कथन करते हुये इस प्रबन्ध के अधिकारी का निरूपण किया गया है तथा नियतेन्द्रिय होकर श्रीवैष्णवमताब्ज भास्कर के अनुष्ठाता सायुज्य मुक्ति के भागी होंगे ऐसा शुभाशीः प्रदान किये हैं-

॥ संक्षिप्त श्रीमन्त्रराज जपविधि ॥

शौचादि से निवृत्त होकर पूर्व अथवा उत्तर के तरफ मुहकर गरम पवित्र आसर पर वैठकर ॐ रामाय नमः ॐ रामभद्राय नमः ॐ रामचन्द्राय नमः इन मन्त्रों को वोलकर तीन वार आचमन कर ॐ रघुनन्दनाय नमः इस मन्त्र को वोलकर हाथ धोवे तब 'ॐ नमो भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्नविशदाय मधुरप्रसन्नवदनाय अमिततेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः क्लीं तेजसे रां तारक ब्रह्म स्वाहा' इस मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर षडक्षर महामन्त्र को पढकर शिर पर उस जल को छिट के पुनः हाथ में जल लेकर नीचे लिखा विनियोग पढकर जल छोड़ दे-ॐ अस्य श्रीराम षडक्षर महामन्त्रस्य श्रीसीता ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीरामो देवता रां बीजं नमः शक्तिः रामाय कीलकं श्रीसीताराम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। तव न्यास करे-

ऋषिन्यास-ॐ श्रीसीता ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ श्रीरामो देवतायै नमः हृदि। ॐ रां बीजाय नमः पादयोः। ॐ रामाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। **करन्यास**-ॐ रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। **अङ्गन्यास**-ॐ रां हृदयाय नमः। ॐ रीं शिरसे स्वाहा। ॐ रूं शिखायै वषट्। ॐ रैं कवचाय हूम् ॐ रौं नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ रः अस्त्राय फट्। **मन्त्राङ्गन्यास**-ॐ रां नमः मूर्ध्नि। ॐ रामाय नमः नाभौ ॐ नमो नमः पाद योः। ॐ रां बीजाय नमः दक्षिणस्तने। ॐ नमः शक्तये नमः वामस्तने। ॐ रामाय कीलकाय नमः हृदि। तव यथाशक्ति प्राणायाम कर इस श्लोक को बोलते हुये सर्वेश्वर श्रीरामजी का ध्यान करें-

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

इसके वाद 'ॐ दाशरथाय विद्यहे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्' इस श्रीराम गायत्री मन्त्र का बारह वार जप करे अनन्तर श्रीमन्त्रराज-

卐 रां रामाय नमः 卐

का कम से कम तीन माला जपकर श्रीराम गायत्री का १२ वार जप करे । पुनः यथा शक्ति प्राणायाम कर **१-श्रीरामः शरणं मम** २-ॐ श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये' श्रीमते रामचन्द्राय नमः तथा ३-

ॐ सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम ॥

इन तीन मन्त्रों को यथा शक्ति जप करते हुये सर्वेश श्रीरामचन्द्रजी को साष्टाङ्ग दण्डवत् करे-

श्रीरामं जनकात्मजामनिलजंवेधोवशिष्ठावृषी
योगीशं च पराशरं श्रुतिविदंव्यासंजिताक्षंशुकम् ।
श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान् यतीन्
श्रीमद्राघवदेशिकञ्चवरदं स्वाचार्यवर्यं श्रये ॥
सीतारामसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

इन गुरु परम्परा मन्त्रों को बोलते हुये अपने आचार्य पर्यन्त समस्त पूर्वाचार्यों का स्मरणपूर्वक श्रीगुरुदेवजी को साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करें ।

॥ श्रीरामानन्दाचार्यजी के मतानुसार पदार्थ-विभाग ॥

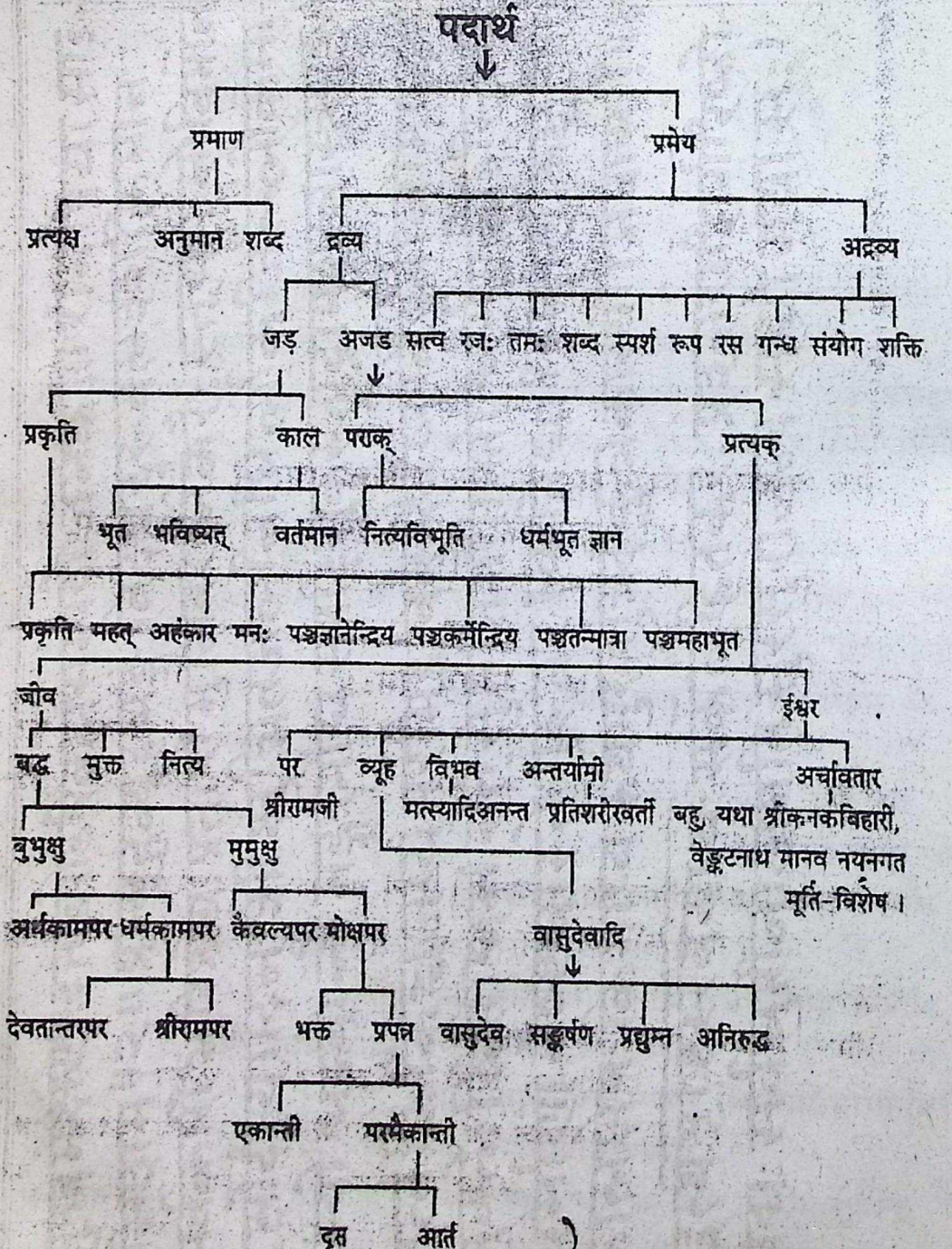

❋ सर्वेश्वरश्रीसीतारामाभ्यां नमः ❋

卐 अपरबादरायणश्रीपुरुषोत्तमाचार्यबोधायनाय नमः 卐

❋ जगद्गुरुश्रीराघवानन्दाचार्ययतीश्वराय नमः ❋

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्ययतिराजप्रणीतः

श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः

श्रीमन्तं श्रुतिवेद्यमद्भुतगुणग्रामाढ्यरत्नाकर
प्रेयःस्वेक्षणसंसुलज्जितमहीजाताक्षिकोणेक्षितम्। भक्ताशेष-
-मनोभिवाञ्छितचतुर्वर्गप्रदं स्वर्द्रुमं रामं स्मेरमुखाम्बुजं
शुचिमहानीलाश्मकान्तिं भजे॥१॥ ऐश्वर्यं यदपाङ्गसंश्रय-
-मिदं भोग्यं दिगीशैर्जगच्चित्रं चाखिलमद्भुतं शुभगुणा वा-
त्सल्यसीमा च या। विद्युत्पुञ्जसमानकान्तिरमितक्षान्तिः

सुपदमेक्षण दत्तान्नोऽरिबलसम्पदो जनकजा रामप्रिया सा-
-दिनिशम्॥२॥ प्रत्यूहव्यूहभङ्गं विदधदुरुबलश्शक्तिमान २
सर्वकारी भूरिश्रेयः प्रतापो मुनिवरनिकरैः स्तूयमानो विमान-
रक्षोदैत्यादिनाशी क्षुभितजलनिधिर्लोकजित्लोकमा-
-न्यो धन्यो नो मङ्गलौघं सपदि सुकरुतां द्रामशस्त्रास्त्रसङ्घः॥३॥

तत्वं किं किञ्च जप्यं परमिह विबुधैर्वैष्णवैर्ध्यानगम्यं?
मुक्तेः किं साधनं सत् सुमतिमतिमतो धर्म एकोऽस्तकञ्च?
धर्माणां वैष्णवास्ते गुरुवर! कतिधा? लक्षणं किञ्च तेषां?
कालक्षेपः किमाप्यं कथमुरुशुभदं कुत्र कार्य्यो निवासः?॥४॥

इत्थं पृष्टस्त्वया यः सकलहितकरः प्रश्ननाशिर्गरिष्ठो-
वेद्यः सर्वश्रुतीनां जगति सुरसुरानन्द सद्यो मया सः।

प्राचीनाचार्यवर्यान् यतिपतिसहितान् सादरं सम्प्रणम्य
सम्यक् शास्त्रानुसारं गुरुनिरत ! समाधीयते श्रूयतां तत् ॥५॥ ३
पृष्टानामेकमाद्यं त्रिकमपि शृणु तद्भेदतो नामभेदै-
र्नित्याऽज्ञाऽचेतना सा प्रकृतिरविकृतिर्विश्वयोनिश्शुभैका।
नानावर्णात्मिकाऽजा त्रिगुणसुनिलयाऽव्यक्तशब्दाभिधेया
निर्व्यापारा परार्था महदहमितिसूरुच्यते तत्त्वविद्भिः ॥६॥

नित्यो ज्ञश्चेतनोऽजः सततपरवशः सूक्ष्मतोऽत्यन्तसूक्ष्मो
भिन्नो बद्धादिभेदैः प्रतिकुणपमसौ नेकधा सूरिवर्य्यैः।
श्रीशाकान्तालयस्थो निजकृतिफलभुक् तत्सहायोऽभिमानी
जीवः सम्प्रोच्यते श्रीरघुपतिसुमते ! तत्त्वजिज्ञासुवेद्यः ॥७॥

सुपदमेक्षण दत्तान्नोऽरिबलसम्पदो जनकजा रामप्रिया सा-
-दिनिशम्॥२॥ प्रत्यूहव्यूहभङ्गः विदधदुरुबलश्शक्तिमान २
सर्वकारी भूरिश्रेयः प्रतापो मुनिनरनिकरैः स्तूयमानो विमान-
रक्षोदैत्यादिनाशी क्षुभितजलनिधिर्लोकजित्लोकमा-
-न्यो धन्यो नो मङ्गलौघं सपदि सुकरुतां द्रामशस्त्रास्त्रसङ्घः॥३॥

तत्वं किं किञ्च जप्यं परमिह विबुधैर्वैष्णवैर्ध्यानगेमष्टं?
मुक्तेः किं साधनं सत् सुमतिमतिमतो धर्म एकोऽस्तकश्च?
धर्माणां वैष्णवास्ते गुरुवर! कतिधा? लक्षणं किञ्चतेषां?
कालक्षेपः किमाप्यं कथमुरुशुभदं कुत्र कार्य्यो निवासः?॥४॥

इत्थं पृष्टस्त्वया यः सकलहितकरः प्रश्नराशिर्गरिष्ठो-
वेद्यः सर्वश्रुतीनां जगति सुरसुरानन्द सद्यो मया सः।

प्राचीनाचार्यवर्यान् यतिपतिसहितान् सादरं सम्प्रणम्य
सम्यक् शास्त्रानुसारं गुरुनिरत ! समाधीयते श्रूयतां तत्" ५ " ३
पृष्टानामेकमाद्यं त्रिकमपि शृणु तद्भेदतो नामभेदै-
र्नित्याऽज्ञाऽचेतना सा प्रकृतिरविकृतिर्विश्वयोनिश्च मूलम्।
नानावर्णात्मिकाऽजा त्रिगुणसुनिलयाऽव्यक्तशब्दाभिधेया
निर्व्यापारा परार्ध्या महदहमितिसूरुच्यते तत्त्वविद्भिः " ६ "

नित्यो ज्ञश्चेतनोऽजः सततपरवशः सूक्ष्मतोऽत्यन्तसूक्ष्मो
भिन्नो बद्धादिभेदैः प्रतिकुणपमसौ नेकधा सूरिवर्य्यैः।
श्रीशकान्तालयस्थो निजकृतिफलभुक् तत्सहायोऽभिमानी
जीवः सम्प्रोच्यते श्रीरघुपतिसुमते ! तत्त्वजिज्ञासुवेद्यः " ७ "

विश्वं जातं यतोऽद्धा यदवितमखिलं लीयते यत्र चान्ते ४
सूर्यो यत्तेजसेन्दुः सकलमविरतं भासयत्येतदेषः।
यद्भीत्या वाति वातोऽवनिरपि सुतलं याति नैवेश्वरोऽज्ञः
साक्षी कूटस्थ एको बहुशुभगुणवान्नव्ययो विश्वभर्ता॥८॥
श्रीमानर्च्यः शरण्यो बहुविधविबुधैर्योगिगम्याङ्घ्रिपद्मो-
स्पृश्यः क्लेशादिभिः सत्समुदितसुयशाः सूरिमान्यो वदान्यः।
राजवच्छ्रीरामचन्द्रः सुमहितमहिमा साधुवेदैरशेषै-
र्निर्मत्युः सर्वशक्तिर्विकलुषविजरो गीर्मनोऽभ्यामगम्यः॥९॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे
तत्वनिरूपणात्मकः प्रथमप्रश्नोत्तराख्यः
प्रथमः परिच्छेदः ॥१॥

सञ्जप्यस्तारकाद्यो मनुवर इह तैर्वह्निबीजं यदादौ रामे
ङेप्रत्ययान्तो रसमित शुभदस्वक्षरः स्यान्नमोऽन्तः। मन्त्रो
रामद्वयाद्यः सकृदितिचरमप्रान्वितो गुह्यगुह्योद्भूताक्ष्यु-
-त्संख्यवर्णः सुकृतिभिरनिशं मोक्षकामैर्निषेव्यः॥१॥

मन्त्राणां व्यापकानां भगवत इह चाव्यापकानान्तु मध्ये ऽ-
तिस्नेष्णो व्यापकः स श्रुतिमुनिसुमतः शिष्टमुख्यैर्गृहीतः।
नित्यानामाश्रयोऽयं परित उरुशुभो राममन्त्रः प्रधान-
प्राप्योऽथ प्रापकश्च प्रचुरतरगुणज्ञानशक्त्यादिकानाम्॥२॥

यावद्वेदार्थगर्भं प्रणविजगदुदाधारभूतं सविन्दु प्रत्यक्तं
रामबीजं श्रुतिमुनिगदितोत्कृष्टषड्व्याप्तिभेदम्।
रेफारूढत्रिमूर्ति प्रचुरतरमहाशक्ति विश्वोन्निदानं
शश्वत्संराजते यद्विविधसकलसंभासमानप्रपञ्चम्॥३॥

तत्राद्येन पदेन रेण भगवान् सीतापतिः प्रोच्यते
श्रीरामो जगतां गुणैकनिलयो हेतुश्च संरक्षकः।
तच्छेषी पदतोऽप्यतो भगवतोऽनन्यार्हशेषत्वकं
व्यावृत्तिस्तु सुरान्तरादिगतसत्तच्छेषताया मुहुः॥४॥
पितापुत्रत्वसम्बन्धो जगत्कारणवाचिना।
रक्ष्यरक्षकभावश्च रेण रक्षकवाचिना॥५॥
शेषशेषित्वसम्बन्धश्चतुर्थ्या लुप्तयोच्यते।
भार्याभर्तृत्वसम्बन्धोऽप्यनन्यार्हत्ववाचिना॥६॥
प्रकारेणापि विज्ञेयो मध्यस्थेन महामते!।
स्वस्वामिभावसम्बन्धो मकारेणाथ कथ्यते॥७॥
आधाराधेयभावोऽपि ज्ञेयो रामपदेनतु। सेव्यसेवकभावस्तु चतुर्थ्या
विनिगद्यते॥८॥ नमःपदेनाखण्डेन त्वात्मातीयत्वमुच्यते।
षष्ठ्यन्तेन मकारेण भोग्यभोक्तृत्वमप्युत॥९॥ ज्ञानानन्दस्व-
रूपोऽवगतिसुखगुणो मेन वेद्योऽणुमानो देहादेरप्यपूर्वो
विविदितर्विधस्तत्प्रियस्तत्सहायः। नित्यो जीवस्तृतीयेन

तु खलु पदतः प्रोच्यते स्वप्रकाशो जिज्ञासूनां सदेत्थं शुभमति-
-सुमते! शास्त्रवित्सज्जनानाम् ॥१०॥ मवाच्योऽहं रवाच्याय ८
शेषभूतोऽस्मि सर्वदा। इतीत्थमेव बोध्यो ज्ञैर्वाक्यार्थस्तद्विवित्सया
॥११॥ रामायेति चतुर्थेन श्रिया देव्यास्तु सर्वदा। चेतनाऽचेतनाच्च
रमणाश्रयतेर्यते ॥१२॥ स सर्वविधबन्धुत्वं सर्वप्राप्यत्वमेव च।
सर्वप्रापकता तेन तथा चोच्चयलिङ्गता ॥१३॥ उच्यते तत्पदेनैव
सच्चिदानन्दरूपता। यावद्भूतिनेतृत्वं श्रीरामब्रह्मणो मतम् ॥१४॥
रागादिकारणे बन्धौ तेनैवाविनिवर्त्यते। बन्धुत्वप्रतिपत्तिश्च
भासमानाविचारतः ॥१५॥ तच्चतुर्थ्या सानुरूपकैङ्कर्यप्रार्थनोच्यते।
विषयान्तरसेवाऽपि प्राप्ता सा विनिवर्त्यते ॥१६॥ पदेन नेनान्त्र
तु पञ्चमेन प्रकथ्यतेऽथो तदनन्यशेषता। हेयं तदन्यार्थमपि
स्वतन्त्रता निवर्त्यतेऽतः सततं स्वकीया ॥१७॥ पदेन षष्ठेन
मदित्यनेन स्वस्वाम्यनन्यार्हकशेषताऽपि। समुच्यते चेतन-
-वाचिना तु तत्किङ्करत्वैकफलत्वमेव ॥१८॥ उपायार्थपरेण-
-सावखण्डनमसोच्यते। उपायो हि मवाच्यस्य रवाच्यो रामएव सः ॥१

चरणावित्यनेनैव वात्सल्यादिकसीतयोः। विलक्षणस्य दिव्यस्य विग्रहस्याश्रयस्य च ॥२९॥ शरणेतिपदेनैवोपाय-स्तद्विग्रहो बुधैः। उपायाध्यवसायस्तु प्रपद्य इति वर्ण्यते ॥३०॥ प्राप्यं मिथुनमेवेति श्रीमते पदतो मतम्। रामचन्द्रेति पदतः स्वामित्वं प्रतिपाद्यते ॥३१॥ विभक्त्यायेतिपदतः शेषवृत्तिर्म-हात्मभिः। विरोधिनो निरासस्तु नमः पदेन वर्ण्यते ॥३२॥ तात्पर्यार्थोऽस्य विज्ञेय आचार्यरुचिसंश्रयः। वाक्यार्थो मन्त्र-रत्नस्य त्वथ निर्णीयते बुधैः ॥३३॥ प्राप्यप्रापकसम्बन्ध-स्वरूपाभिनिरूपणम्। प्रधानार्थस्तु तद्युग्मकैंकर्यस्य प्रधानता ॥३४॥ स्वदोषाभ्यनुसन्धानमनुसन्ध्यर्थ उच्यते। एवमेवानुसन्धेयं मोक्षकामैरहर्दिवम् ॥३५॥

प्रोक्ता वत्सक! मन्त्ररत्नविवृतिः सन्मानसाभीष्टद सद्वेद्यं सकृदित्यवेहि चरमं निर्णीतवाक्यार्थकम्। रामीयं हि तदीयमन्त्रनिरतैरुद्बोधनीयं परं द्वात्रिंवशत्प्रमिताक्षरं

मनुपदं द्व्यर्द्धं जगद्विश्रुतम् ॥३६॥ अत्रोपायाऽन्तरस्याथो निवृत्तिः
प्रतिपाद्यते। सकृदित्येवकारेण तूपायनिरपेक्षता ॥३७॥ १०
प्रपन्नायेतिपदतस्तूपायस्थानमुच्यते। उपायत्वं भगवतस्त-
-वेति पदतस्तथा ॥३८॥ अस्मीत्यनेन चोपायस्वीकारः प्रतिपा-
-द्यते। समाप्त्यर्थेति शब्देन तूपायानन्यतोच्यते ॥३९॥ चका-
-रतोऽनुक्तसमुच्चयार्थतो निगद्यते त्वन्य उपाय आत्मवित्।
उपायसंसेव्यधिकारिलक्षणं पदेन वै याचत इत्यनेन तु ॥४०॥
अथाभयमितिप्राप्तिप्रतिबन्धकवारणम्। सर्वभूतेभ्य इत्येव
प्राप्यस्य प्रतिबन्धकम् ॥४१॥ ददामीतिपदेनाथोपायस्य सर्व-
शक्तिता। एतदित्येवपदतोऽसंशयत्वमितीर्य्यते ॥४२॥ तात्पर्या-
-र्थोऽस्य विज्ञेयः शरण्यरुचिसंश्रयः। तत्प्रापकस्वरूपस्य
वाक्यार्थोऽथ निरूपणमम् ॥४४॥ प्रधानार्थः परेशस्य स्वरूपस्य
निरूपणम्। निर्भरत्वानुसन्धानमनुसन्ध्यर्थ उच्यते ॥४५॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराज्रणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे
जप्यात्मकनिरूपणात्मको द्वितीयप्रश्नोत्तराख्यो
द्वितीय परिच्छेदः ॥२॥

प्रश्नोच्यते महाप्रज्ञ ! ध्यानं ध्येयस्य चिन्तनम् बुधैरात्म-
परैर्नित्यं जितप्राणैर्जितेन्द्रियैः ॥१॥ विकचपद्मदलायतवीक्षणं ११
विधिभवादिमनोहरसुस्मितम् जनकजादृगपाङ्गसमीक्षितं
प्रणतसत्समनुग्रहकारिणम् ॥२॥ मुनिमनः सुमध्रुवतचुम्बि-
-तस्फुटलसन्मकरन्दपदाम्बुजम् बलवदद्भुतदिव्यधनुः
-शरामहितजानुबिलम्बिमहाभुजम् ॥३॥ परार्घ्यहाराङ्गद-
-चारुनूपुरं सुपद्मकिञ्जल्कपिशङ्गवाससम् नवसद्घन-
-श्यामतनुं गुणाकरं कृपार्णवं सदुदयाम्बुजासनम् ॥४॥
प्रसन्नलावण्यसुभग्नमुखाम्बुजं जगच्छरण्यं शरणं नरो-
-त्तमम् दयापरं दाशरथिं महोत्सवं स्मरामि रामं सह सीतया
सदा ॥५॥ द्विभुजस्यैव रामस्य सर्वशक्तेः प्रियोत्तम ध्यान-
-मेवं विधातव्यं सदा रामपरायणैः ॥६॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराज्ञणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे
ध्याननिरूपणात्मस्तृतीयप्रश्नोत्तराख्यः
तृतीयः परिच्छेदः ॥३॥

एवं तेऽभिहितं ध्यानं शृणु तन्मुक्तिसाधनम्। मुमुक्षूणां परं वेद्यं विधेयं चाथ सर्वदा ॥१॥ तप्तेन मूले भुजयोः समङ्कनं शरेण चापेन तथोर्ध्वपुण्ड्रकम्। श्रुतिस्मृतं नाम च मन्त्र-मालिके संस्कारभेदाः परमार्थहेतवः॥२॥ यतेन्द्रियः शुचिः शुद्धवेशधृक् सुकुलोद्भवः। सदाचारपरो नम्रः शास्त्रज्ञो देशन-पटुः॥३॥ विरक्तधर्मनिरतो ध्यानाभ्यासी सुबुद्धिमान्। निग्रहेऽनुग्रहे चैव समर्थो देशिको मतः॥४॥ हीनाङ्गोऽधिकाङ्गश्च कपटी कृष्णदन्तवान्। नेत्ररोगी च कुष्टी च वाचाल-कश्च वामनः॥५॥ व्यसनी बहुनिद्रश्च कुनखो बहुभोजनः। नेदृशो देशिको योग्यो मुमुक्षोर्मुक्तिसाधने॥६॥ श्रद्धान्वितो विशुद्धात्मा मेधावी विनयी पटुः। कुलीनः सच्चरित्रश्च बुद्धिमान् व्रततत्परः॥७॥ गुरुशुश्रूषणे शक्तः आज्ञाकारी जितेन्द्रियः। प्रणतित्वरणे भक्तिनिष्ठः शिष्यः कार्यस्तु दैशिकैः॥८॥ परीक्ष्य शिष्यं समुपासकं गुरुर्वर्षं समन्त्र्यर्च्य

च वह्निदेवताम्। चापादिभिर्हेतिवरैः सुतापितैः दिनेसुपुण्ये
नियतः समङ्क्येत ॥९॥ सहोर्ध्वपुण्ड्रं सुमृदा श्रिया तथा रामा-
-दिदास्यान्वितनाम कुर्यात्। मन्त्रं तथैवोपदिशेद्विधानतो १३
मालां च दध्यात् तुलसीसमुद्भवाम् ॥१०॥ एवं महान् भागवत
सुसंस्कृतो रामस्य भक्तिं परमां प्रकुर्यात्। महेन्द्रनीलाश्मरुचेः
कृपानिधेः श्रीजानकीवल्लभरावणारेः ॥११॥ उपाधिनिर्मुक्त-
मनेकभेदका भक्तिः समुक्ता परमात्मसेवनम्। अनन्यभावेन
मुहुर्मुहुः सदा महर्षिभिस्तैः खलु तत्परत्वतः ॥१२॥ सा तैलधारा-
समनित्यसंस्मृतेः सन्तानरूपेत्रि परानुरक्तिः। भक्तिर्विवेका-
-दिकसप्तजन्या तथा यमाद्यष्टसुबोधकाङ्गा ॥१३॥ उदारकीर्तेः
श्रवणं च कीर्तनं हरेर्मुदा संस्मरणं पदाश्रितिः। समर्चनं वन्दन-
-दास्यसख्यान्यात्मार्पणं सा नवधेति गीयते ॥१४॥

एकादशीत्यादिमहाव्रतानि वै कुर्याद्विधेयानि हरिप्रियाण्यथ।
विद्धा दशम्या यदि साऽरुणोदये सद्भादशीं तूपवसेद्विहायताम् ॥१५॥

शुद्धा दशम्या सुयुतेति भेदभागेकादशी सा द्विविधा प्रबुध्यताम्।
वेधोऽपि बोध्यो द्विविधोऽरुणोदये सूर्योदये वा दशमी प्रवेशतः॥१३॥
स पञ्च पञ्च प्रमितो ह्यपो बुधैः कालस्तु षट्पञ्चमितोऽरुणोदयः। १४
प्रातस्तु सप्तेषुमितो निगद्यते सूर्योदयः स्यात्तु ततः परं तथा॥१७॥
घटी चतुष्कं ह्यरुणोदयाभिधः प्रातर्विमृष्टः समयो महर्षिभिः।
तथाऽत्र वेधप्रकृतेर्विपश्चितः प्राहुर्विभागान् चतुरो विवेकिनः॥१८॥
घटीत्रयं सार्द्धमथारुणोदये वेधोऽतिवेधः कथितो घटीद्वयम्।
रविप्रभासस्य तथोदितेऽर्द्धके सूर्ये महावेध इतीर्यते बुधैः॥१९॥
योगस्तुरीयस्तु दिवाकरोदये तेऽर्वाक् सुदो घातिशमार्थबोधकाः।
सर्वेऽपि वेधा मुनिभिर्विनिश्चिता निर्णेतृभिस्तस्य तु तत्त्वदर्शिभिः॥२०॥
पूर्णेति सूर्योदयकालतः सा या प्राङ्मुहूर्तद्वयसंयुता च। अन्या
तु विद्धा परिकीर्तिता बुधैरेकादशी सा त्रिविधापि शुद्धा॥२१॥
एका तु द्वादशीमात्राधिका ज्ञेयोभयात्मिका। द्वितीया च तृतीया
तु तथैवानुभयात्मिका॥२२॥ तत्राद्या तु परैवास्ति ग्राह्या विष्णु-
परायणैः। शुद्धाप्येकादशी हेया परतो द्वादशी यदि॥२३॥उपोष्य
द्वादशीं शुद्धां तस्यामेव च पारणम्। उभयोरधिकत्वे तु परोपोषणा

विचक्षणैः॥२४॥ उन्मीलिनी वञ्जुलिनी सुपुण्याः सा त्रिस्पृशा-
-ऽथो खलु पक्षवर्धनी। जया तथाष्टौ विजया जयन्ती द्वादश्य
स्ता इति पापनाशनी॥२५॥ आषाढभाद्रोर्जासितेषु संगता मैत्र-
-श्रवोऽन्त्यादिगतद्व्युपान्त्यकैः। चेद् द्वादशी तत्र न पारणं बुधः
पादैः प्रकुर्याद् व्रतवृन्दहारिणी॥२६॥

मासे मथौ या नवमी सुयुक्ता शुक्लाऽदितीशेन शुभेन भेन।
कर्के महापुण्यतमा सुलग्ने जातोऽत्र रामः स्वयमेव विष्णुः॥२७॥
तामष्टमीवैद्धयुतां विहाय व्रतोत्सवं तत्र करोतु भक्तः।
प्रसङ्ख्यसूर्यग्रहतोऽधिका वै या केवला सानवमीप्युपोष्या॥२८॥
प्रत्र प्रकुर्वीत मुदा व्रतोत्सवं रामार्चनं जागरणं महाफलम्।
प्रनेकजन्मार्जितपापनाशनं श्रीरामकीर्तेः श्रवणं च कीर्तनम्॥२९॥
पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते दलन।
कृष्टा क्षितिः श्रीजनकेन तस्याः सीताऽऽविरासीद् व्रतमत्र कुर्यात्॥३०॥

स्वात्यां कुजे शैवतिथौ तु कार्तिके कृष्णेऽञ्जनागर्भत एव १६
मेषके। श्रीमान् कपीट् प्रादुरभूत् परन्तपो व्रतादिना तत्र तदुत्सवं चरेत् ॥३१॥

वैशाखमासीयचतुर्दशी सिता निशामुखे याऽनिलभेन संयुता।
सोमेऽवतारो नृहरेरभूदथो व्रतोत्सवं तत्र मुदा समाचरेत ॥३२॥
स्मरेण विद्धा तु चतुर्दशी यदा भवेद्धनापत्यविनाशिनी तदा।
तत्रोपवासो न जनैर्विधीयतां महात्मभिर्विष्णुपरायणैरपि ॥३३॥

भाद्रेऽसिते निशीथेऽथ रोहिण्यामष्टमीतिथौ। सिंहमर्के गते सौम्ये
कृष्णो जातो विधूदये ॥३४॥ कृष्णजन्माष्टमी सोक्ता तस्यां
कृष्णव्रतोत्स्वम्। कुर्वीत विधिसंयुक्तं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥३५॥
त्याज्याष्टमी चेदथ वाजिविद्धा तथाग्निविद्धं विधिभं च हेयम्।
चेदष्टमी नो विधिभेन युक्ता महात्मभिर्विष्णुपरायणैस्तैः ॥३६॥

विद्धा जयन्ती यदि सप्तमीयुता शुद्धा तथा सा नवमीयुता यदि।
विद्धाऽथ वेद्याऽग्न्ययुता हि रोहिणी ज्ञेया तु शुद्धा यदि सा परान्विता ॥३७॥ ९७

भाद्रेऽथ शुक्लेऽभिजिति प्रभुर्हरिर्या द्वादशी वैष्णवभेल संयुता।
तत्रादितावाविरभूच्च वामनो व्रतोत्सवं तत्र मुदा समाचरेत् ॥३८॥
स्पृशत्यैकादशीं स्पृष्टा द्वादशी श्रवणेन चेत्। विष्णुपृङ्खलयोगो-
-ऽयं भाद्रे शुक्ले प्रकीर्तितः ॥३९॥ श्रवणा द्वादशी ह्येषा पुनरावृत्ति-
-नाशिनी। तस्मादुपवसेदत्र यत्नतो मतिमान्नरः ॥४०॥ तथा
यथाकालमतन्द्रितैस्तैरथाधिरोपादिकमुत्सवादिकम्।
सदा विधेयं हरितोषणं परं शुभप्रदं तद् बहुशास्त्रसम्मतम् ॥४१॥
कर्मप्रवाहेण तु चेतनस्य संसरतस्य संसारमहार्णवे चिरम्।
उपर्य्यहो संसरतोऽवशस्य सत्कृपोडुवत्येव हरेरहैतुकी ॥४२॥
मोक्षे मुमुक्षोर्नहि तारतम्यं फले प्रपन्नस्य तु सत्प्रपत्तेः।

अस्त्येव तद्धाम कृपोपलभ्ये पतिं श्रियोऽनन्तगुणार्णवं तम् ॥४३॥
भवन्त्युपायान्तरमेव सर्वे स्वातन्त्र्यतो मुक्तिपदप्रदास्ते।
सुकर्मसंवेदनभक्तियोग प्रपत्तिनिष्ठैः समनुष्ठितास्तु ॥४४॥
विभुत्वतो निर्भरता परैस्तैः श्रीव्याप्तिरार्यैरभिधीयते हि।
प्रपञ्चनिर्मातृविरिञ्चहेतुश्रीरामपादाब्जनिविष्टचित्तैः ॥४५॥
नित्यं सा पुरुषकारभूता सीताऽनपायिनी। अनुपायान्तरै-
र्विज्ञैरुच्यते तदुपायता ॥४६॥ विभोश्च वात्सल्यमहार्णवस्य
वै वात्सल्यमिष्टं जनदोषभोगिता। समुच्यते तैर्नृभर-
स्वतन्त्रकैः सदा सदाचार परायणैर्वरैः ॥४७॥ दयान्यदुःख-
स्य निगद्यते बुधैरनाकृतैस्तैरसहिष्णुता स्मृता। कृपा-
महाब्धेः समुदारकीर्तेर्विष्णोरचिन्त्याखिलवैभवस्य वै ॥४८॥
स्वीयप्रवृत्तेस्तु निवृत्तिरिष्टो न्यासोऽथ वेद्योऽपि बुधैः सदैव।
ऐकान्तिकैस्तत्त्वविचारदक्षैः परात्मनिष्ठैः परमास्तिकैस्तैः ॥४९॥
सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणः सदा शक्ता अशक्ता पदयोर्जगत्प्रभोः।

अपेक्ष्यते तत्र कुलं बलं च नो न चापि कालो न च शुद्धतापि
वै ॥५०॥ धर्मत्यागोऽपि परमैकान्तिकैरुच्यते वरैः। इत्थं हि ९५
कर्मणां त्यागः स्वरूपस्यास्खलस्य च ॥५१॥ अथोपायान्त-
राण्येव प्रवदन्ति मनीषिणः। विरोधीति प्रपत्तेस्तु सम्बन्ध-
ज्ञानकोविदाः ॥५२॥ लोकसंग्रहणार्थन्तु श्रुतिचोदितकर्म-
णाम्। शेषभूतैरनुष्ठानं तत्कैङ्कर्यपरायणैः ॥५३॥ रामप्रसाद-
हेतुर्हि न्यासोऽयं विनिगद्यते। नित्यशत्रैः सदाचारैर्हरि-
पादाब्जमानसैः ॥५४॥ कृतप्रपत्तिस्मरणं प्रायश्चित्तमथो-
च्यते। परमाप्तैश्च तन्निष्ठैः कोविदैस्तैर्मुमुक्षुभिः ॥५५॥
उत्कृष्टवर्णैरपि वैष्णवैर्जनैर्निकृष्टवर्णैः स तदीयसेवने।
तथानुसर्त्तव्य इतीष्यते बुधैः शास्त्रैर्विधेये विधिगोचरैः
परैः ॥५६॥ अणुव्याप्तौ च भगवानणुष्वणुरुच्यते।
पराकाष्ठापरैर्विज्ञैर्मतविद्भिर्महात्मभिः ॥५७॥ आत्मारामै-
स्तथोपायस्वरूपज्ञानिभिश्च तैः। मतज्ञैर्विरजापारं

कैवल्यमिति मन्यते ॥५८॥ जितेन्द्रयश्चात्मरतो बुधो-
ऽसत् सुनिश्चितं नाम हरेरनुत्तमम्। अपारसंसारनिवार-
णक्षमं समुच्चरेद् वैदिकमाचरन् सदा ॥५९॥ २०

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे
मुक्तिसाधननिरूपणात्मकश्चतुर्थप्रश्नोत्तराख्यः
चतुर्थः परिच्छेदः ॥४॥

एवं तेऽभिहितं वत्स! प्रकृष्टं मुक्ति साधनम्। उत्तमं सर्वधर्माणां शृणु
धर्मं सनातनम् ॥१॥ दानं तपस्तीर्थनिषेवणं जपो न चास्त्यहिंसा
सदृशं सुपुण्यकम्। हिंसामतस्तां परिवर्जयेज्जनः सुधर्मनिष्ठो दृढ-
धर्मबुद्धये ॥२॥ श्रयन्ति धर्मास्तु तया पृथक् स्थितान् सुवक्रगाः
सिन्धुमिनापि निम्नगाः। काष्ठस्थवह्निरिव घातको हरेश्चराचरस्थस्य
च जन्तुहिंसकः ॥३॥ जलस्थजन्तूत्पन्नशरीरिहिंसया विवर्जयेन्मांस-
मुदारधीः सदा। दयापरोऽधोगतिहेतुरूपयाऽऽचराय लभ्यं भवती-

-निवृत्तये॥४॥ न स्त्रियं परिगृह्णीयाद्विरक्तो वैष्णवः क्वचित्।
मन्वादिस्मृतिशास्त्रेषु तन्निषेधस्य शासनात्॥५॥ विवाहे तु कृते २१
स स्यादारूढपतितो ध्रुवम्। आरूढपतितस्यार्थे प्रायश्चित्तं न विद्यते
॥६॥ प्रच्युतो नैष्ठिकाद्धर्मादात्महापि प्रकीर्तितः। मठाध्यक्षत्व-
-दीक्षादौ बहिष्कार्यः स यत्नतः॥७॥ व्यासेन ब्रह्मविद्यातो बहिष्कारो-
-ऽस्य सूचितः। श्रिष्टा यज्ञादिकार्य्येषु वर्जयन्ति तथाविधम्॥८॥
विरक्तैः वैष्णवैस्तस्मादारूढपतितो न हि। व्यवहारेषु योक्तव्यः तत्सं-
-सर्गोऽपि पापकृत्॥९॥ समर्प्य कर्मणि शुभानि वैष्णवो रामाद्य
भक्ष्यं च निवेद्य भक्षयेत्। प्रहर्दिवं वीतभयं समुत्तमं विमुक्तधीः
स्वाघनिवृत्तिकामनः॥१०॥

आचोवतारोऽपि च देशकालप्रकर्षहीनः श्रितसम्मतश्च। सहिष्णुरप्राकृत-
-देहयुक्तः पूर्णोऽर्चकाधीनसमात्मकृत्यः॥११॥ स्वयं व्यक्तश्च सैद्धो
मानुष स्वच। देशादौ हि प्रशस्ते स वर्तमानश्चतुर्विधः॥१२॥
प्रावाहनासनाभ्यां च पादाद्याऽऽचमनस्तथा। स्नानवस्त्रोपवीतैश्च

गन्धपुष्पसुधूपकैः॥१३॥ दीपनैवेद्यताम्बुलप्रदक्षणविसर्जनैः।
षोडशार्चाप्रकारैस्तमेतैरर्चेत्सदा सुधीः॥१४॥ जगत्पते! श्रीश! २२
जगन्निवास! प्रभो! जगत्कारण! रामचन्द्र! नमो नमः कार-
-णिकाय तुभ्यं पादाब्जयुग्मे तव भक्तिरस्तु॥१५॥ मनोमिलिन्द-
-स्तव पादपङ्कजे रमार्चिते संरमतां भवे भवे। यशः श्रुतौ ते ममकर्ण-
-युग्मकं त्वद्भक्तसङ्गोऽस्तु सदा मम प्रभो॥१६॥ उरःशिरोदृष्टि-
-मनोवचःपदद्वयप्राजत्करयुग्मजानुभिः। अङ्गैरिक्षतौ तं प्रणमेद-
-ष्टाभिर्दीर्घं तथैतैः कृतधीश्च दण्डवत्॥१७॥ बाहू च पादौ च
प्रसार्य साञ्जलिः स्तवैः स्तुवन् यश्च नमेद् रघूत्तमम्। शतैः
क्रतूनां तु सुदुर्लभां गतिं स चाप्नुयाद् रामपरायणो जनः॥१८॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीते श्रीवैष्णवमताब्जभास्करे
मुख्यधर्मात्मकश्रीवैष्णवधर्मनिरूपणात्मकःपञ्चमप्रश्नोत्तराख्यः
पञ्चमः परिच्छेदः ॥५॥

अथोच्यते वैष्णवभेद दीप्सतो ज्ञातुं च ते विष्णुपरायणैर्जनैः॥

सुवेदनीयो बहुधा महामते सुनिश्चितो विज्ञवरैर्महर्षिभिः॥१॥
प्राप्तुं परं सिद्धिमकिञ्चनो जनो द्विजातिरिच्छञ्शरणं हरिं व्रजेत्। परं दयालुं स्वगुणनपेक्षितक्रियाकलापादिकजातिबन्धनम्॥२॥
जीवो द्विधाऽमन्यत बद्धमुक्तभेदेन पूर्वैस्तु महर्षिवर्यैः। बद्धोऽपि तत्र द्विविधो मुमुक्षुबुभुक्षुभेदाद् गदितो मतज्ञैः॥३॥ अनादिकर्मैकरजातनानादेहाभिमानी सुमतोऽथ बद्धः। स चाऽच्युताऽहैतुककृपाबलेनाविद्याक्रियावासरुचिप्रवृत्तेः॥४॥ विमोक्तुमिच्छुस्तु मुमुक्षुरुक्तः सम्बन्धतः प्राज्ञसुसंमतोऽयम्। तथैव सांसारिकभोगमिच्छुर्बुभुक्षुरन्यः कथितो बुधेन्द्रैः॥५॥ मुमुक्षवोऽपि द्विविधा महर्षिभिः प्रोक्ता अकामाः स्मृतिभक्तिशालिनः।
वेदोक्तवर्णाश्रमकर्मकारिणस्तदुपासकादिप्रतिभेदभेदिताः॥६॥
स्वकर्मविज्ञानसभक्तिसाधनं तयोररीकृत्य सुविज्ञ! कञ्चन।
सम्प्राप्य सम्बन्धविशेषमुत्तमं सदा भवन्त्येव च मोक्षनिश्चयाः॥७॥
विहाय चान्यत्परमं दयानिधिं प्राप्यं समर्थं निरपायमीश्वरम्।

२३

उपायमेतेऽध्यवसीय सुस्थिता ज्ञेयाः प्रपन्नाः सततं हरिप्रियाः॥८॥
पुरुषकारैकनिष्ठास्तु हरेस्वातन्त्र्यमीक्ष्य च। कृपाप्रचुरमाचार्यं २४
मत्वोपायमवस्थिताः॥९॥ द्विविधास्ते निजाचार्यकृपामात्रप्रप-
न्नकाः। तथा सेवातिरेकप्रपन्नाश्चेति सदा सताम्॥१०॥ प्रपन्ना-
श्चापि दृप्तः स्य तथा चार्त इति द्विधा। शरीरस्थितिपर्य्यन्तमाद्यो-
ऽत्रैव यथोचितम्॥११॥ प्राप्तदुःखादिभुञ्जानः शरीरान्तेऽवसीय
च। महाबोधोऽति विश्वासो मोक्षसिद्धिमवस्थितः॥१२॥ अथा-
न्त्योऽसहमानस्तत्क्षणमेव तु संसृतिम्। तथैव भगवत्प्राप्तौ
सत्वरस्वान्त उच्यते॥१३॥ श्रवणादिमात्रनिष्ठाः शुद्धभक्ताः
प्रकीर्तिताः। अन्तर्भाव्यास्तत्र तत्र तथानुक्ता मुमुक्षवः॥१४॥
नित्यकादाचित्कभेदान्मुक्तद्वैविध्य मुच्यते। नित्याः कदाचि-
त्तत्रापि सिद्धाः सुपुरुषावराः॥१५॥ गर्भजन्मादिदुःखं नेऽनव-
भूय स्थिताः सदा। सीतारामप्रियाः शश्वदाञ्जनेयादयो मताः॥१६॥
नित्यमुक्ता अपि द्वैध्या परिजनाः परिच्छदाः। मारुत्याद्याः किरी-
टाद्याः क्रमात् ते च प्रकीर्त्तिताः॥१७॥ भागवताः केवलाश्च कदाचित्का

ऽप्यपि द्विधा। तत्र भागवता बोध्या येषु भगवत्परा:॥१८॥ भगवद्भोग्य-
भूत्यादिसाक्षात्कारसुखाश्रया:। श्रीरामभानसा नित्यं तदनुध्या- २५
-नतत्परा:॥१९॥ केचिद्गुणानुसन्धानपरा: कैङ्कर्यतत्परा:। इत्थं
महर्षिभि: प्रोक्ता द्विविधा भागवत्परा:॥२०॥ द्विविधा केवला
बोध्या दुरवभावैकतत्परा:। ऽऽत्मानुभूतिपरमा इति चोक्ता महर्षिभि:॥२१॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे
श्रीवैष्णवभेदनिरूपणात्मकःषष्ठप्रश्नोत्तराख्यः

षष्ठः परिच्छेदः ॥६॥

समुच्यते सम्प्रति लक्षणं सन्महात्मनां सद्गुरुवैष्णवानाम्।
विरञ्चिशम्भुश्रितरामचन्द्रपदारविन्दस्थितचेतसां हि॥१॥
धृतोर्द्ध्वपुण्ड्रतुलसीसमुद्भवां दधच्च कण्ठे शुभमालिकां जनः।
तज्जन्मकर्माणि हरेरुदाहरेद् गृहणंश्च नामानि शुभप्रदानि सः॥२॥
सीतापतेः संस्मरणप्रयान्निरन्तरं कृष्णां च गायेत्सुयशोऽङ्कितां मुहुः।
रम्यं तदीयं च चराचरात्मकं पश्यन् सतां सद्गुणमुदारधीश्चरेत्॥३॥

चापादिपञ्चायुधाङ्कितो हि ताङ्कः समीक्ष्य हृष्टश्च हरिप्रियान्यम्।
तथा विधानं भक्तिपरः प्रपूजयेत् सुवैष्णवान् जन्मफलादि संस्तुवन्॥४॥
पञ्चायुधाङ्काङ्कितवैष्णवा ये विप्रा अथ क्षत्रियवैश्यशूद्राः। स्त्रियस्तथाऽन्येऽपि च विष्णुरूपा जगत्पवित्राप्रपवित्रिणस्ते॥५॥
ते सर्वतीर्थाश्रयभूतदेहा देशो महाभागवता वसन्ति। यस्मिन्
स तददर्शनसंस्थितिभ्यां सूते सुपुण्यं निखिलाघशून्यम्॥६॥
तदर्चनात्तत्पदनीरपानात्तत्सङ्गतेस्तत्प्रणतेर्विधानात्। नृणां
हि तच्चिष्टसुभोजनाच्च स्यात्कोटिजन्मार्जितपापनाशः॥७॥
कार्पासकैः सप्तभिरद्भुतैर्गुणैः सुनिर्मितं तत्कटिसूत्रमुत्तमम्।
काषायकं वस्त्रयुगं च धारयेत्तथोर्ध्वपुण्ड्रादिकमेव वैष्णवः॥८॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे
श्रीवैष्णवलक्षणनिरूपणात्मकःसप्तमप्रश्नोत्तराख्यः
सप्तमः परिच्छेदः ॥७॥

कार्यो महात्मभिर्नित्यं कालक्षेपो मुमुक्षुभिः। परमात्मपरैरित्थं २७
वैष्णवैरिति वर्ण्यते ॥१॥ प्रातर्मध्याह्नसायं कृतशुचिकृतिभिः
राममभ्यर्च्य सम्यक्, श्रीमद्रामायणेन प्रतिदिनमखिलैर्भार-
-तेन प्रपन्नैः। शक्तैरानन्दभाष्यैरथ च शुभतमाचार्यदिव्य-
प्रबन्धैः कालक्षेपो विधेयः सुविजितकरणैः स्वाकृतेर्यावदन्तम् ॥२॥
स्नानादिकर्माणि विधाय नित्यं ग्रन्थानथन संस्मृणुयादशक्तः।
श्रीरामसन्नामसुकीर्तनं च दूयानुसन्धानमथो विदध्यात् ॥३॥
दिव्येषु देशेषु सतां प्रसङ्गं तदीयकैङ्कर्यपरायणः सन्। यावच्छ-
-रीरान्तमहर्दिवं तत्कथामुदारां शृणुयाद्ध्रुवध्रीम् ॥४॥तत्रा-
-प्यशक्तास्तु कुटीरमात्रं विधाय कुर्युस्त्वथ राघवादौ। ग्रन्थत्र
वासं च गुरूपदिष्टान्मन्त्रान्जपन्तो ह्यभिमानशून्याः ॥५॥भक्त्या-
दियुक्तस्य तथाऽनहङ्कृतेर्महात्मनस्तस्य निदेशपालनम्।
उपायमेनं चरमं निरन्तरं सुवैष्णवोऽयं विदधात्वतन्द्रितः ॥६॥

तदर्थपुष्पप्रचयेन सन्ततं तथैव तन्मन्दिरमार्जनादिना ।
तदीयनामाभ्यसनेन तन्मनाः क्षिपेत्स कालं नितरां गतालसः ॥७॥ २८
तीर्थेसु वासेन सतां महात्मनां समागमेनाथ तदर्चनेन ।
जिज्ञासया तद्यशसः श्रवेण तच्छ्रावणेन स्मरणेन तस्य ॥८॥
रामस्य साङ्गस्य सपार्षदस्य सीतासमेतस्य सहानुजस्य ।
कैङ्कर्यमीर्ष्यारहितः प्रकुर्वन् क्षिपेत् स्वकालं सततं सुभक्तः ॥९॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे कालक्षेपनिरूपणात्मकोऽष्टमप्रश्नोत्तराख्यः

अष्टमः परिच्छेदः ॥८॥

तथाविधैस्तैः परमार्थभूतं सुवैष्णवैः प्राप्यमथोच्यते यत् ।
जितेन्द्रियैरात्मरतैर्बुधाग्र्यैर्महत्तमैः स्वाभिमतार्थदोहम् ॥१॥
श्रीमान् दिव्यगुणाब्धिरौपनिषदो हेतुः शरण्यः प्रभुः देवेशो
जगतामन्तादि निधनो ब्रह्मादि देवार्चितः । तारकोन ल-

चन्द्रमोबहुमद्दः सौदामिनी भासकोऽजय्यो वीरसपत्न-
-शस्त्रनिचयैर्जेता च तेषां मुहुः ॥२॥ नित्यो ब्रह्मविधायकश्च २९
पुरुषो वेदप्रदो ब्रह्मणे नित्यानां शरणं तपःप्रभृतिभिः
सद्योगिनां दुर्लभः। एकश्चेतनचेतनो भूतजगद्ध्येयः
स्वतन्त्रो वशी स प्राप्योऽस्ति मुमुक्षुभिः सुगुरुभिः सत्सङ्ग-
-भिस्तत्परैः ॥३॥ तथाविधं प्राप्यमथो सुवैष्णवः सुचिन्तय-
-न्नित्यमनुक्षणं प्रिय। सदा सदाचाररतं गुरुं वरं ज्ञातं भजे-
-तारिवलसंशयच्छिदम् ॥४॥ सत्सङ्गतः सन् विगतस्पृहो
मुहुरामं प्रपद्याऽथ गुरोर्मुखादसौ। कर्माखिलं सम्परिशुद्ध्य
चाऽऽत्मवान् प्रारब्धमेवं प्रहृतान्यकर्मकः ॥५॥ न्यासात्
स्वतन्त्रेश्वरजातसद्द्यानिर्लूनमायान्वय एव दैशिकः।
हार्दोत्तमानुग्रहलब्धमध्यसन्नाडोशुभद्वारबहिर्विनिर्गतः ॥६॥
मार्गे ततः सोऽर्चिरुपैति मुक्तकस्तथाऽर्चिषोऽहो दिनतः सुरार्चितः।
ऊनार्पूर्यमासैर्विविधैस्तु वासरैः पक्षं प्रभूतोत्तमशर्मविज्वरः ॥७॥

पक्षादुदङ्मासमथो षडात्मकं तेभ्यश्च संवत्सरमन्दतो रविम्।
चन्द्रं ततश्चन्द्रमसोऽथ विद्युतं स तत्र तत्राखिलदेवपूजितः॥८॥
परं पदं सोऽयमुपेत्य नित्यममानवं ब्रह्मपथेन तेन। सायुज्यमेव ३०
प्रतिलभ्य तत्र प्राप्यस्य सन्नन्दति तेन साकम्॥९॥ सीमान्त-
-सिन्ध्वाप्लुत स्व धन्यो गत्वा परब्रह्म सुवीक्षतोऽथ। प्राप्यं महा-
-नन्दमहाब्धिमग्नो नावर्तत जातु ततः पुनः सः॥१०॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे
प्राप्यनिरूपणात्मकोनवमप्रश्नोत्तराख्यः
नवमः परिच्छेदः ॥९॥

महामते प्रोच्य तदीयमाप्यं तेषां निवासस्तु निरूप्यतेऽथ। मोक्ष-
-प्रदः शास्त्रसुसम्मतश्च जिज्ञासुबोध्यो मनसावधानः॥१॥
प्रद्वेषतीर्थेषु वसेत् प्रपूजयन् स यत्र यत्राविरभूद् यथा यथा।
तथा तथा तत्र रघूत्तमं जगत्पतिं चतुर्वर्गफलप्रदं हरिम्॥२॥
वैकुण्ठदेशो खलु वासुदेवमामोदसंज्ञे त्वथ कर्मणाऽहम्।

प्रद्युम्नमब्जाक्षमपि प्रमोदे सम्मोद दैशान्तु तथाऽनिरुद्धम् ॥३॥
विष्णुं तु लोके वरसत्यसंज्ञके पद्माक्षमित्थं त्वथ सूर्यमण्डले।
क्षीराब्धिमध्ये शुभशेषशायिनं श्वेते तथा द्वीपवरे च तारकम् ॥४॥ ३१
तथा बदर्याभिध आश्रमे वरे सुरर्षिराजर्षि महर्षिसेविते। नारायणं
लोकनमस्कृताङ्घ्रिकं मुनीशसेव्ये त्वथ नैमिषे हरिम् ॥५॥ शाल-
-ग्राममभोघदिव्यफलदं देवं हरिक्षेत्रतोऽयोध्यायां रघुपुङ्गवं गुण-
-निधिं श्रीरामचन्द्रं प्रभुम्। सत्स्थाने मथुराभिधाश्रमवरे श्रीबाल-
-कृष्णं परं मायायां मधुसूदनं सुरनरध्येयांघ्रिपद्मं सदा ॥६॥
काश्यां भोगिशायं सनातनमथावन्त्यामवन्तीपतिं श्रीमद्द्वार-
-वतीतिनाम्नि शुभदे श्रीयादवेन्द्रं मुदा। रम्ये श्रीव्रजनामके
सुरनतं गोपीजनानां प्रियं ब्रह्मेशादि किरीटसेवितपदाम्भोजं
भुजङ्गाश्रयम् ॥७॥ वृन्दावने सुन्दरनन्दसूनुकं गोविन्दमेवं
त्वथ कालियह्रदे। गोवर्धने गोपसुवेषधारिणं तथा भवद्धोडपि
च पद्ममलोचनम् ॥८॥ शारिं तथा गोमत स्वपर्वते तथा हरिद्वार
मृजुं जगत्पतिम्। तीर्थे प्रयागेवत माधवाभिधं तथा गयायां तु

गदाधरं परम् ॥ ९॥ गङ्गासागरसङ्गमेऽतिशुभदे विष्णुं तथा राघवं
शङ्खद भूरिगुणालये मुनिवृते श्रीचित्रकूटे विभुम्। नन्दिग्राम ३२
उदारकीर्तिनिकरे श्रीराक्षसघ्नं प्रभुंरम्ये श्रीमति विश्वरूपिणमथो
क्षेत्रे प्रभासेऽमले ॥१०॥ श्रीकूर्माऽचल उत्तमे च सदयं कूर्मं सुरे-
-श्वेडितं नीलाद्रौ पुरुषोत्तमं त्वथ महासिंहं च सिंहाचले। श्रीमन्तं
तुलसीवने तु गदिनं सर्वार्थिदं तत्प्रिये क्षेत्रे श्रीकृतशौचके तु
सततं पापापहं चेश्वरम् ॥११॥ श्वेताद्रौ त्वथ सिंहरूपिणमयो
श्रीधर्मपुर्यांतथा योगानन्दमशेषदेवसुनतं श्रीकाकुले तु
प्रभुम्। देवैर्वन्द्यमथान्ध्रनायकमिह श्रीदं तथाऽहोबले
तस्मिन्न श्रीगरुडादिसंज्ञ उचिते देवं हिरण्यार्दनम् ॥१२॥
श्रीविट्ठलं तं किल पाण्डुरङ्गे श्री वेङ्कटाद्रौ तु रमासखं च।
नारायणं श्रीमति यादवाद्रौ नृसिंहमित्थं चटिकाचलेऽपि ॥१३॥
सुरेन्द्रवन्द्यं वरदं त्वहर्दिवं सुनिर्मले श्री शुभवारणाचले।
काञ्च्यां तथा श्री कमलायताक्षकं समर्चनीयं बुधवैष्णवोत्तमैः
॥१४॥

तोताद्रिसंज्ञादिषु वैष्णवोत्तमैरेवं तथा तुङ्गशयादिकं प्रभुम्।
कार्यो निवासो नितरां शुभार्थिभिराराधयद्भिः सकलार्थदा- ३३
-यिनम्॥१५॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीते श्रीवैष्णवमताबजभास्करे
श्रीवैष्णवनिवासस्थाननिरूपणात्मकोदशमप्रश्नोत्तराख्यः
दशमः परिच्छेदः ॥१०॥

सदानुसन्धेयमिमं त्रिकालं मुमुक्षुभिस्तत्परमार्थमित्थम्।
ज्ञात्वा न चैवास्ति सुवेदनीयं जिज्ञासुभिस्तैरवशिष्यमाणम्॥१॥
गुरुद्रुहेनो न शठाय चेदं न नास्तिकायोपदिशेत् कदाचित्।
नावैष्णवायापि रहस्यमेतन्न चाथ दैन्याहतवेदनाय॥२॥
जितेन्द्रियः प्रपन्नः सन् बुधः श्रीजानकीपतिम्। अनुष्ठाय

मतं चेदं परमं स्थानमाप्नुयात् ॥ ३ ॥ रामानन्दप्रोक्तः
श्रीवैष्णवमताब्जभास्करो भवतु । आनन्दभाष्यसोदर ३४
एषोऽन्तस्तमोविनाशाय ॥ ४ ॥

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरु श्रीरामानन्दाचर्ययतिराजप्रणीतः
श्रीवैष्णवमताबजभास्करः समाप्तः

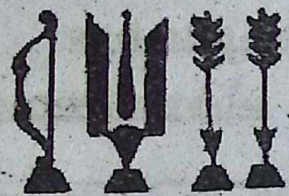

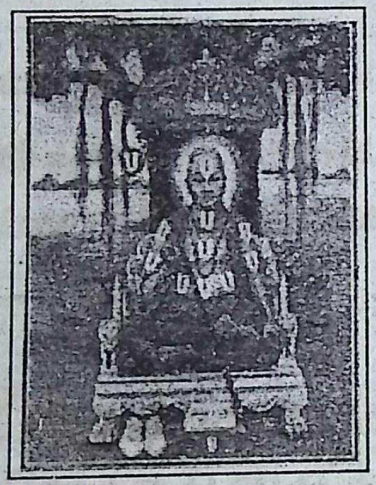

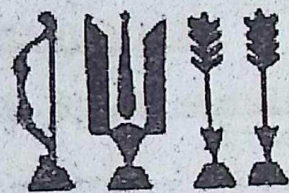

जय श्री राम

श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः

निदर्शिका

पृष्ठ

१-संक्षिप्त-परिचय	१	२४-शिष्यलक्षण ७-८ श्लोक	३४-
२-आनन्दभाष्यकारजी की परम्परा	६	२५-संस्कारनिरूपण ९-११ श्लोक	३४
३-आनन्दभाष्य	९	२६-भक्तिनिरूपण १२-१४ श्लोक	३५
४-आनन्दभाष्य का मत	११	२७-एकादशी निर्णय १५-२६ श्लोक	३५
५-आनन्दभाष्य प्रतिपाद्य-श्रीरामजी	११	२८-श्रीरामनवमी व्रत निर्णय २७-२९ श्लोक	३७-
६-आनन्दभाष्य एवं सगुणनिर्गुण ब्रह्म	१३-	२९-श्रीजानकी व्रत निर्णय ३० श्लोक	३७
७-आनन्दभाष्य में सद्यमुक्ति निषेध	१४	३०-श्रीहनुमान् व्रत निर्णय ३१ श्लोक	३८
८-सिंहावलोकन	१५	३१-श्रीनृसिंह व्रत निर्णय ३१ ३३ श्लोक	३८
९-संक्षिप्त श्रीमन्त्रराज जपविधि	२०	३२-श्रीकृष्णाष्टमी व्रत निर्णय ३४-३७श्लोक	३८
१०-श्रौतपदार्थ विभाग	२२-	३३-श्रीवामन व्रत निर्णय ३८-४१ श्लोक	३९
११-मङ्गलाचरण श्लोक-१-३	२३	३४-कृपादिभेदनिरूपण ४२-५९ श्लोक	३९
१२-दश प्रश्न श्लोक ४ था	२४	३५-श्रीवैष्णवधर्मनिरूपण १-४ श्लोक	४२
१३-समाधानामृतवचन ५वां श्लोक	२४-	३६-विरक्तवैष्णव विवाहनिषेध ५-१०श्लोक	४३
१४-प्रकृतिनिरूपण ६ ठा श्लोक	२५	३७-अर्चावतारनिरूपण ११-१८ श्लोक	४३
१५-जीवनिरूपण ७वां श्लोक	२५	३८-श्रीवैष्णवभेदनिरूपण १-२१ श्लोक	४४
१६-ईश्वरनिरूपण ८-९वें श्लोक	२६	३९-श्रीवैष्णव लक्षण निरूपण १-८ श्लोक	४७
१७-जप्यरहस्यनिरूपण १ श्लोक	२७	४०-कालक्षेपनिरूपण १-९ श्लोक	४९
१८-मन्त्रराजरहस्यनिरूपण २-२३	२७	४१-प्राप्यनिरूपण १-४ श्लोक	५०
१९-मन्त्ररत्नरहस्यनिरूपण २४-३४	३०	४२-अर्चिरादि मार्गनिरूपण ५-१० श्लोक	५१
२०-चरममन्त्ररहस्यनिरूपण ३५-४४	३१	४३-निवासस्थाननिरूपण १-१५ श्लोक	५२
२१-श्रीरामध्याननिरूपण १-६ श्लोक	३३	४४-ग्रन्थ की फल श्रुति १-४ श्लोक	५५
२२-मुक्तिसाधननिरूपण १-२ श्लोक	३४		
२३-आचार्यलक्षण ३-६ श्लोक	३४		

卐 श्रीरामजी का ध्यान 卐

विकचपद्मदलायतवीक्षणं विधिभवादिमनोहरसुस्मितम् ।
जनकजादृगपाङ्गसमीक्षितं प्रणतसत्समनुग्रहकारिणम् ॥
मुनिमनः सुमधुव्रतचुम्बितस्फुटलसन्मकरन्दपदाम्बुजम् ।
बलवदद्भुतदिव्यधनुः शरामहितजानुविलम्बिमहाभुजम् ॥
परार्ध्यहाराङ्गदचारुनूपुरं सुपद्मकिञ्जल्कपिसङ्गवाससम् ।
लसद्घनश्यामतनुं गुणाकरं कृपार्णवं सद्हृदयाम्बुजासनम् ॥
प्रसन्नलावण्यसुभृन्मुखाम्बुजं जगत् शरण्यं शरणं नरोत्तमम् ।
दयापरं दाशरथि महोत्सवं स्मरामि रामं सह सीताय सदा ॥
द्विभुजस्यैव रामस्य सर्वशक्तेः प्रियोत्तम ? ध्यानमेवं विधातव्यं सदारामपरायणैः ॥

हे सुरसुरानन्द ? विकसित पद्म दल प्रफुल्लित कमलदल के समान आयत लम्बायमान नेत्र-आँख हैं जिनकी, तथा जिनका मनोहर इषत् हास्य ब्रह्मा प्रभृतिक देवगण के मन को भी अतिशय मनोहारी है अर्थात् मोहित करनेवाले। और जिन भगवान् श्रीरामजी का मुखकमल भगवती श्रीसीताजी के कटाक्ष से सतत देखा जाता है। प्रणाम मात्र करने से प्रपन्न व्यक्तियों के ऊपर अनुग्रह करनेवाले। तथा जिन भगवान् का चरणकमल अच्छी तरह से विकसित है तथा मुनिगण के मनरूपी मधुलोभी भ्रमणों से चुम्बित-सदा सेवित है। तथा जो भगवान् आजानुबाहु हैं। तथा एतादृश भुजाओं में अति सामर्थ्य युक्त अद्भुत आश्चर्य कार्यकारी दिव्य लोकोत्तर धनुष तथा बाण विद्यमान हैं। एवं जो भगवान् बहुमूल्य मनोहर कण्ठहार तथा अंगद केयूर विजोंठा, और नूपुर प्रभृतिक अनेक आभूषमों से युक्त हैं। एवं कमल किंजल्क की तरह पीत वस्त्र से सर्वदा सुशोभित हैं, और जिन भगवान् का श्रीविग्रह शरीर आषाढ मासिक नीलमेघ की तरह श्यामल है। जो भगवान् हेय प्रत्यनीक अनन्तकल्याण गुणों का आकार हैं। तथा कृपा का समुद्र हैं इसलिए मुनिलोग इनको दयासागर कहते हैं। भक्त प्रपन्न व्यक्तियों का हृदय कमल ही जिनका आसन है। अर्थात् जो भक्त के हृदय में सदा निवास करते हैं। और जिनका मुखकमल विलक्षण शोभा से सर्वदा युक्त रहता है। तथा जो परमात्मा स्वरूप हैं। और शरणागत व्यक्तियों के रक्षण करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहते हैं। वे एक दो व्यक्तियों का ही रक्षण करते हैं ऐसा नहीं किन्तु जगत् मात्र का-सम्पूर्ण जगत् का रक्षक हैं नरोत्तम हैं। दशरथ राजा के पुत्ररूप से अवतार लिया है। जो स्वयं महोत्सवरूप हैं। तथा परम दयालु एवं श्रीसीताजी से सदा युक्त हैं। एतादृश श्रीरामजी का मैं सदा स्मरण करता हूं। हे प्रियोत्तम सुरसुरानन्द ? सर्वशक्तिमान् द्विभुज श्रीरामजी का शुभेच्छु श्रीरामभक्त पुरुष सदा ध्यान करें। तुम भी उन्हीं का ध्यान करो।

॥ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ ॥

सचित्र धार्मिक मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में

प्रकाशक का नाम-	स्वामी श्रीहरिप्रसादाचार्यजी	सम्पादक का नाम-	स्वामी श्रीसीतारामाचार्यजी
राष्ट्रीयता-	भारतीय	राष्ट्रीयता-	भारतीय
	श्रीकोसलेन्द्रमठ, पो. पालडी, अहमदाबाद-३८०००७	पता-	श्रीकोसलेन्द्रमठ, पो. पालडी, अहमदाबाद-३८०००७
प्रकाशन स्थान-	श्रीकोसलेन्द्रमठ, पो. पालडी, अहमदाबाद-३८०००७		दू.६६०१००१

ऊपर लिखा विवरण मेरी जानकारी के अनुसार सत्य है। स्वामी श्रीसीतारामाचार्यजी

१-श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः ०१-से-५६ प्रस्तोता-आनन्दभाष्यसिंहासनासीनजी

इन्टरनेट-१-डब्लू डब्लू डब्लू. श्रीरामानन्दसम्प्रदाय. ओ आर जी

२-डब्लू डब्लू डब्लू. आचार्यपीठ. ओ आर जी

Printed metter book post

श्रीरामानन्दाचार्यपीठ श्रीकोसलेन्द्रमठ के धर्मप्रचार विभाग से धर्मप्रचारार्थ प्रकाशित

मुद्रक-श्रीआनन्दभाष्यमुद्रणालय

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यपीठ चौक

प्रा. सं. प्रति श्री.....

४१४ ग्रन्थपाल त्रिभुवन विश्व विद्यालय कीर्तिपुर काठमाण्डु नेपाल
पुस्तकालय वाल्मीकि अध्ययन संस्थान काठमाण्डु नेपाल